समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

# प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जनवरी 2020

वर्ष : 32, अंक : 14

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 दिसम्बर 2019

वार्षिक चंदा : ₹ 60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

E-mail: news.shantikunj@gmail.com RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

वनवासी क्षेत्र के उत्थान के लिए प्रस्तुत किया आदर्श 3

कैंसर पीड़ितों और दृष्टिहीन दिव्यांगों में जाकर बाँटी खुशियाँ 4

जिसमें इंसानियत जिंदा है, वह देवता है 5

प्रान्तीय युवा सम्मेलन उत्तर प्रदेश 8

# मनीषा युगऋषि के विचार-प्रवाह से जुड़े

## आवश्यकता साधनों की नहीं, साधना से अंत :करण की आस्थाओं को पवित्र करने की है

### बुद्धिमानी हितकारी भी हो

लोक व्यवहार में मनीषी शब्द का अर्थ प्रायः उस महाप्राज्ञ से लिया जाता है, जिसका मन उसके वश में हो। जो मन से नहीं संचालित होता, अपितु अपने विचारों द्वारा मन को चलाता है, उसे मनीषी एवं ऐसी प्रज्ञा को 'मनीषा' कहा जाता है। शास्त्रकार का कथन है-"**मनीषा अस्ति येषां ते मनीषी नः।**" लेकिन साथ ही यह भी कहा है- "**मनीषितस्तु भवन्ति, पावनानि न भवन्ति।**" अर्थात् - मनीषी तो कई होते हैं, बड़े-बड़े बुद्धिमान होते हैं, परन्तु वे पावन हों, पवित्र हों, यह अनिवार्य नहीं। मनीषा में प्रस्तुत प्रवाह को मोड़ने की जबरदस्त क्षमता होती है। प्रतिभाशाली-बुद्धिमान मनीषी होना अलग बात है एवं पवित्र, शुद्ध अंतःकरण रखते हुए बुद्धिमान मनीषी होना दूसरी। जिनका अंतःकरण पवित्र है, जो तपस्वी है, वही परिस्थितियों को सुखद दिशा में मोड़ पाते हैं।

यह कथन आज की परिस्थितियों में नितांत सही है। आज सम्पादक, बुद्धिजीवी, लेखक, अन्वेषक, प्रतिभाशाली, वैज्ञानिक तो अनेकानेक हैं, देश-देशान्तरों में फैले पड़े हैं, लेकिन वे मनीषी नहीं है, क्यों? क्योंकि तपःशक्ति द्वारा अंतःशोधन कर उन्होंने पवित्रता नहीं अर्जित की।

साहित्य की आज कहाँ कमी है? जितना साहित्य नित्य विश्वभर में छपता है, उस पहाड़ के समान सामग्री को देखते हुए लगता है कि वास्तव में मनीषी बढ़े हैं, पढ़ने वाले भी बढ़े हैं, लेकिन इस सबका प्रभाव क्यों नहीं पड़ता? क्यों एक लेखक की कलम कुत्सा भड़काने में ही निरत रहती है एवं उस साहित्य को पढ़कर तुष्टि पाने वालों की संख्या बढ़ती है? इसके कारण ढूँढ़े जाएँ तो वहीं आना होगा, जहाँ कहा गया था- 'पावनानि न भवन्ति।' यदि इतनी मात्रा में उच्च स्तरीय चिंतन, को उत्कृष्ट बनाने वाला साहित्य रचा गया होता एवं उसकी भूख बढ़ाने का माद्दा जन समुदाय के मन में पैदा किया गया होता, तो क्या ये विकृतियाँ नजर आतीं, जो आज समाज में विद्यमान हैं? दैनन्दिन जीवन की समस्याओं का समाधान यदि संभव है, तो वह युग मनीषा के हाथों ही होगा।

### सतयुग की वापसी सुविचारों से

नवयुग यदि आएगा, तो विचार शोधन द्वारा ही; क्रांति होगी, तो वह लहू और लोहे से नहीं, विचारों की विचारों से काट द्वारा होगी। समाज का नवनिर्माण होगा, तो वह सद्विचारों की प्रतिष्ठापना द्वारा ही संभव होगा। अभी तक जितनी मलिनता समाज में प्रविष्ट हुई है, वह बुद्धिमानों के माध्यम से ही हुई है। द्वेष-कलह, व्यापक नर-संहार जैसे कार्यों में बुद्धिमानों ने ही अग्रणी भूमिका निभाई है। यदि वे सन्मार्गगामी होते, उनके अंतःकरण पवित्र होते, तप ऊर्जा का संबल उन्हें मिला होता, तो उन्होंने विधेयात्मक विज्ञान-प्रवाह को जन्म दिया होता, सत्साहित्य रचा होता, सृजनात्मक आंदोलन चलाए होते।

### कुछ महान वैचारिक क्रांतियाँ

कार्ल मार्क्स ने सारे अभावों में जीवन जीते हुए अर्थशास्त्र रूपी ऐसे दर्शन को जन्म दिया, जिसने समाज में क्रांति ला दी। पूँजीवादी किले ढहते चले गये एवं साम्राज्यवाद दो तिहाई धरती से समाप्त हो गया। दास कैपिटल रूपी उनकी रचना ने एक नवयुग का शुभारंभ किया, जिसमें श्रमिकों को अपने अधिकार मिले एवं पूँजी के समान वितरण का यह अध्याय खुला, जिससे करोड़ों व्यक्तियों को सुख-चैन की, स्वावलम्बन प्रधान जिंदगी जी सकने की स्वतंत्रता मिली।

रूसो ने जिस प्रजातंत्र की नींव डाली थी, उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के पक्षधर शोषकों की रीति-नीति ही उसकी प्रेरणा स्त्रोत होगी। मताधिकार की स्वतंत्रता, बहुमत के आधार पर प्रतिनिधित्व का दर्शन विकसित न हुआ होता, यदि रूसो की विचारधारा ने व्यापक प्रभाव जन समुदाय पर न डाला होता।

बुद्ध की विवेक एवं नीतिमत्ता पर आधारित विचार क्रांति एवं गाँधी, पटेल, नेहरू द्वारा पैदा की गयी स्वातन्त्र्य आंदोलन की आँधी उस परोक्ष मनीषा का प्रतीक है, जिसने अपने समय में ऐसा प्रचंड प्रवाह उत्पन्न किया कि युग बदलता चला गया। उन्होंने कोई विचारोत्तेजक साहित्य रचा हो, यह भी नहीं। फिर यह सब कैसे संभव हुआ। यह तभी हो पाया, जब उन्होंने मुनि स्तर की भूमिका निभाई, स्वयं को तपाया, विचारों में शक्ति पैदा की एवं उससे वातावरण को प्रभावित किया।

### वर्तमान संदर्भ में

परिस्थितियाँ आज भी विषम हैं। वैभव और विनाश के झूले में झूल रही मानव जाति को उबारने के लिए हमें आस्थाओं के मर्मस्थल तक पहुँचना होगा और मानवीय गरिमा को उभारने, दूरदर्शी विवेकशीलता को जगाने वाला प्रचण्ड पुरुषार्थ करना होगा। साधन इस कार्य में कोई योगदान दे सकते हैं, यह सोचना भ्रांतिपूर्ण है। दुर्बल आस्था नहीं, अपितु अंतराल को तत्त्वदर्शन और साधना प्रयोग के उर्वरक की आवश्यकता है। अध्यात्मवेत्ता इस मरुस्थल की देखभाल करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते व समय-समय पर संव्याप्त भ्रांतियों से मानवता को उबारते हैं। अध्यात्म की शक्ति विज्ञान से भी बड़ी है। अध्यात्म ही व्यक्ति के अंतराल में विकृतियों के माहौल से लड़ सकने, निरस्त कर पाने में सक्षम तत्त्वों की प्रतिष्ठापना कर पाता है। हमने व्यक्तित्वों में पवित्रता व प्रखरता का समावेश करने के लिए मनीषा को ही अपना माध्यम बनाया एवं उज्ज्वल भविष्य का सपना देखा है।

हमने अपने भावी जीवनक्रम के लिए जो महत्त्वपूर्ण निर्धारण किए हैं, उनमें सर्वोपरि है लोकचिंतन को सही दिशा देने हेतु एक ऐसा विचार प्रवाह खड़ा करना, जो किसी भी स्थिति में अवांछनीयताओं को टिकने ही न दे। आज जनसमुदाय के मन-मस्तिष्क में जो दुर्गति घुस पड़ी है, उसी की परिणति ऐसी परिस्थितियों के रूप में नजर आती है, जिन्हें जटिल-भयावह समझा जा रहा है। ऐसे वातावरण को बदलने के लिए व्यास की तरह बुद्ध, गाँधी, कार्लमार्क्स की तरह, मार्टिन लूथर, अरविन्द, महर्षि रमण की तरह भूमिका निभाने वाले मुनि व ऋषि के युग्म की आवश्यकता है, जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रयासों द्वारा विचार क्रांति का प्रयोजन पूरा कर सके।

यह पुरुषार्थ अंतःक्षेत्र की प्रचण्ड तप साधना द्वारा ही संभव हो सकता है। इसका प्रत्यक्ष रूप युग मनीषा का हो सकता है जो शक्ति द्वारा उत्कृष्ट स्तर का साहित्य रच सके, जिसे युगांतरकारी कहा जा सकता है। अखण्ड ज्योति के माध्यम से जो संकल्प हमने आज से सैंतालीस वर्ष पूर्व (यह आलेख सन् 84-85 में सूक्ष्मीकरण साधना के समय लिखा गया था) लिया था, उसे अनवरत निभाते रहने का हमारा नैतिक दायित्व है।

### युगऋषि का तप-पुरुषार्थ-प्रेरणा

युगऋषि की भूमिका अपने परोक्ष रूप से निभाते हुए उन अनुसंधानों की पृष्ठभूमि बनाने का हमारा मन था, जो वैज्ञानिक अध्यात्म का प्रत्यक्ष रूप इन तर्क, तथ्य, प्रमाणों को आधार मानने वाले समुदाय के समक्ष रख सके। आज चल रहे वैज्ञानिक अनुसंधान यदि उनसे कुछ दिशा लेकर सही मार्ग पर चल सकें, तो हमारा प्रयास सफल माना जाएगा।

आत्मानुसंधान के लिए अन्वेषण कार्य किस प्रकार चलना चाहिए, साधना उपासना का वैज्ञानिक आधार क्या है? मनःशक्तियों के विकास में साधना उपचार किस प्रकार सहायक सिद्ध होते हैं? ऋषिकालीन आयुर्विज्ञान का पुनर्जीवन कर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को कैसे अक्षुण्ण बनाया जा सकता है?

गायत्री की शब्द शक्ति एवं यज्ञाग्नि की ऊर्जा कैसे व्यक्तित्व को सामर्थ्यवान एवं पवित्र तथा काया को जीवनीशक्ति सम्पन्न बनाकर प्रतिकूलताओं से जूझने में समर्थ बना सकती है? ज्योर्तिविज्ञान के चिरपुरातन प्रयोगों के माध्यम से आज के परिप्रेक्ष्य में मानव समुदाय को कैसे लाभान्वित किया जा सकता है? ऐसे अनेकानेक पक्षों को हमने अथर्व वेदीय ऋषि परंपरा के अंतर्गत अपने शोध-प्रयासों में अभिनव रूप से प्रस्तुत कर दिया है।

हमने उनका शुभारंभ कर बुद्धिजीवी समुदाय को एक दिशा दी है, आधार खड़ा किया है। परोक्ष रूप से हम उसे सतत पोषण देते रहेंगे। सारे वैज्ञानिक समुदाय का चिंतन इस दिशा में चल पड़े, आत्मिकी के अनुसंधान में अपनी प्रज्ञा नियोजित कर वे स्वयं को धन्य बना सकें, ऐसा हमारा प्रयास रहेगा। सारी मानव जाति को अपनी मनीषा के द्वारा एवं शोध-अनुसंधान के निष्कर्षों के माध्यम से लाभान्वित करने का हमारा संकल्प सूक्ष्मीकरण तपश्चर्या की स्थिति में और भी प्रखर रूप ले रहा है, इसकी परिणतियाँ आने वाला समय बताएगा।

*युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*
*(वाङ्मय-युगदृष्टा का जीवन दर्शन' पृष्ठ 7.60-61)*
*से संकलित, संपादित*



**नवयुग यदि आएगा, तो विचार शोधन द्वारा ही; क्रांति होगी, तो वह लहू और लोहे से नहीं, विचारों की विचारों से काट द्वारा होगी। समाज का नवनिर्माण होगा, तो वह सद्विचारों की प्रतिष्ठापना द्वारा ही संभव होगा। अभी तक जितनी मलिनता समाज में प्रविष्ट हुई है, वह बुद्धिमानों के माध्यम से ही हुई है। ... यदि वे सन्मार्गगामी होते, उनके अंतःकरण पवित्र होते, तप ऊर्जा का संबल उन्हें मिला होता, तो उन्होंने विधेयात्मक विज्ञान-प्रवाह को जन्म दिया होता, सत्साहित्य रचा होता, सृजनात्मक आंदोलन चलाए होते। • परम पूज्य गुरुदेव**



**2020**
**के स्वागत का उत्साह**
**(पृष्ठ 7 पर पढ़ें)**

**गुरुधाम से मिली नई ऊर्जा, प्रखर प्रेरणा और नए संकल्पों के साथ नववर्ष का शुभारंभ**

# आओ वसन्त पधारो, आपका स्वागत है

## कृपया बाह्य प्रकृति के साथ-साथ हमारी अंतः प्रकृति को भी सुरम्य-सरस बनायें

ऋतुराज बसन्त! आओ, पधारो। हम सब बड़े उल्लसित हृदय से आपका स्वागत करते हैं। शायद यह आपके दिव्य प्रवाह का ही प्रभाव है कि हमारे हृदयों में यह उल्लास उभर रहा है। क्योंकि आपका प्रवाह केवल स्थूल प्रकृति को ही प्रभावित नहीं करता, वह अंतःकरण स्थित सूक्ष्म प्रकृति को भी प्रभावित करने में समर्थ है। हमने उसका प्रभाव दोनों क्षेत्रों में देखा-अनुभव किया है।

**बाह्य प्रकृति में** आपकी दिव्य लहर एक अनोखे सृजनात्मक सौन्दर्य को उभार देती है। यों वर्षाकाल की ऊर्वरता भी धरती के चप्पे-चप्पे में सुरम्य हरियाली बिखेर देती है। धरती हरी चूनर ओढ़ लेती है। उसमें भी सृजनशीलता और सौंदर्य की अच्छी अनुभूति होती है। लेकिन आपकी बात कुछ और ही है। आपका स्पर्श पाते ही प्रकृति की हरीतिमा पर सुरम्य पुष्पों की सुन्दर कलाकृतियाँ उभरने लगती हैं। पुष्पों का पराग मधुर सुगन्धि बिखेरने लगता है। यही नहीं, वृक्ष-वनस्पतियों के रस का परिपाक होने से उनके पोषक और औषधीय गुण भी बढ़ने लगते हैं।

ऐसा लगता है कि धरती आपके ही अवतरण के लिए ग्रीष्मऋतु में कठोर तप करती है। उसके तप से संतुष्ट परमात्मचेतना उस पर उर्वर पर्जन्य की वर्षा कर देती है। धरती प्रभु के अनुदान से तृप्त होकर तत्काल अपनी पोषक सम्पदा को हरियाली के रूप में प्राणिमात्र के हित उदारतापूर्वक खोल देती है। फिर वह रस के परिपाक के लिए शीतकाल में अंतर्मुखी हो जाती है। इतनी तैयारी देखकर परमसत्ता आपके अवतरण का पथ प्रशस्त कर देती है। आपके प्रवाह का स्पर्श पाते ही परिपक्व रस सृजनशील होकर तरंगित हो उठता है। नयी कोपलों को विकसित होने का मार्ग देने के लिए वृक्षादि पुराने पत्तों को त्याग देते है। जैसे-जैसे वासन्ती प्रवाह का प्रभाव बढ़ता है, वैसे-वैसे वे पुष्पित-फलित होने लगते हैं। प्राणिमात्र उल्लसित होकर उससे तुष्ट-पुष्ट होने लगते हैं। वातावरण एक दिव्य छटा और दिव्य अनुभूतियों से भर जाता है।

**अंतः प्रकृति** को परिष्कृत-विकसित करने के लिए भी यही प्रक्रिया परमसत्ता को मान्य है। जो व्यक्ति अपने जीवन में आपका दिव्य प्रवाह उभारना चाहते हैं, वे भी पहले आत्म परिष्कार के लिए तप साधना करते हैं। तप की ऊर्जा से विकार नष्ट होने पर परमात्मसत्ता उस पर अनुग्रहों की वर्षा करने लगती है। उस दिव्य अनुग्रह के तुष्ट साधक अपने आचार-व्यवहार से वातावरण में हरीतिमा जैसी सुखद सरसता पैदा करने लगते हैं। फिर उस दिव्य अनुग्रह को अपने अन्दर परिपक्व करने के लिए शरद जैसी अन्तर्मुखी साधना में डूब जाते हैं। जैसे भोजन पचने पर शरीर के रस-रक्त में रूपान्तरित होता है, वैसे ही प्रभु के अनुग्रह आत्मसात होने पर साधक के अन्दर दिव्य रस, सृजनात्मक उल्लास उभरता है। यही दिव्य उल्लास आन्तरिक वसंत का द्योतक होता है। हे ऋतुराज! हम इसी रूप में आपके दिव्य अनुग्रह का अनुभव करना चाहते हैं। हम पर भी कृपा करें।

### आपका अनोखा प्रभाव

मनुष्यों के जीवन में आपके प्रवाह का अनोखा प्रभाव हमने देखा है। अवतारियों, ऋषियों, महापुरुषों के जीवन में इसके तमाम उदाहरण मिलते हैं।

**मर्यादा पुरुषोत्तम राम** के जीवन में वासंती प्रवाह उभरा था। वे राज्य सुख छोड़कर तपस्वी वेश में वन की ओर चल पड़े। कवियों ने लिखा है कि जैसे पक्षी पुराने पंखों को झड़ाकर सुख का अनुभव करते हैं, जैसे जल के ऊपर तैरती काई हटने पर निर्मल जल की शोभा बढ़ जाती है, वैसे ही राजकीय वस्त्र-आभूषण आदि त्यागकर राम सुख-संतोष का अनुभव करने लगे। उनके अन्तर में उभरे उस दिव्य प्रवाह ने उनके जीवन को भी सुशोभित किया तथा वनवासी तपस्वी ऋषियों से लेकर वनवासी मनुष्यों, रीछ-वानरों के जीवन को भी सुख-संतोष और गौरव-गरिमा से रम्य बना दिया।

**हे दिव्य वसन्त**! आपके ही आन्तरिक प्रवाह ने **राजकुमार सिद्धार्थ** को राज्य सुख, परिवार सुख से ऊपर उठाकर **बोधिसत्व** का स्तर प्रदान करा दिया। **राजा भरथरी** के जीवन में आपके विविध रूप उभरे। प्रारंभिक युवा काल में उन्होंने '**श्रृंगार शतक**' लिखकर यौवन की रमणीय विशेषताओं को प्रकाशित किया। फिर कर्त्तव्यनिष्ठ राजा के नाते उसी वासंती उल्लास ने उनसे '**नीति शतक**' लिखवा दिया। जीवन के अगले मोड़ पर उन्होंने उसी आन्तरिक उल्लास से '**वैराग्य शतक**' प्रकाशित कर दिया। कैसा अद्भुत है आपका आन्तरिक प्रवाह।

आपने ही **गाँधी जी** में वह दिव्य संवेदना जगा दी कि वे टिप-टॉप रहने वाले 'मिस्टर गाँधी' से आधे वस्त्र पहनने वाले 'महात्मा गाँधी' बन गए।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों ने भी भारत माता से यही प्रार्थना की कि उनके अन्दर भी वासंती उमंगें जगा दे। 'मेरा रंग दे बसंती चोला...' गाते हुए उन्होंने अपनी प्रवृत्तियों को त्याग-बलिदान की वासंती उमंगों से भर लिया और धन्य हो गए।

### हम पर भी कृपा करें

हे वसंत! हम पर भी थोड़ा अनुग्रह करें। हमारे अन्दर भी नवसृजन की वासंती उमंगों और क्षमताओं का संचार कर दें। हम भी अपनी ठिठुरन रूपी संकीर्णता से उबरें। हमारे अन्दर भी सृजनशील सौन्दर्ययुक्त प्रवाह उमड़े। हम भी गौरवमय संतोष से विभूषित हों और अपने प्रभाव क्षेत्र को भी, अपने चारों ओर भी तुष्टि-पुष्टियुक्त वातावरण का सृजन कर सकें। आपका ऐसा दिव्य प्रवाह उभरे कि हमारी रूढ़िवादिता रूपी पुराने पत्ते झड़ जायें। विवेकपूर्ण निर्णय की नई कोपलें फूट पड़ें। सत्संकल्पों के पुष्प खिल उठें और सत्कर्मों की दिव्य सुरभि चारों ओर फैलने लगे।

नवयुग सृजन की ईश्वरीय योजना उतरी है। इसे युग परिवर्तन का वासंती प्रवाह ही तो कहा जाएगा। जब विराट प्रकृति इस सृजनशील प्रवाह से ओत-प्रोत हो रही है तो हमारी अंतःप्रवृत्ति भी उसका लाभ क्यों न उठाये?

युगऋषि ने भी अपनी जीवनी में यह स्वीकार किया है कि उनके गुरु के अनुग्रह से उनके जीवन में एक वासंती प्रवाह उमड़ा, उसी ने उनके जीवन को धन्य बना दिया। हम भी अपने गुरु के अनुशासनों को स्वीकार करते हुए आपके दिव्य प्रवाह की कामना करते हैं। कृपा करके पधारें, हमारी अतःप्रकृति को भी सृजनशील वासंती सौन्दर्य से विभूषित करके धन्य बना दें।

# ऐसे युगऋषि को करें नमन, जाग्रत् वसन्त जिनका जीवन

## वासंती ऊर्जा से अंदर-बाहर सृजनशील-सुरुचिपूर्ण प्रखर प्रवाह जाग्रत्-सक्रिय करें

युगऋषि ने अपना आध्यात्मिक जन्मदिन 'वसंत पर्व' को मनाया और उसे हर दृष्टि से सार्थक किया। उनके जीवन-वसंत का प्रवाह लगभग 64 वर्ष (1926 की वसंत पंचमी से 1990 की गायत्री जयंती तक) चला। इस वासंती प्राण-प्रवाह को उन्होंने अपने कण-कण में, क्षण-क्षण में इस जीवन्तता के साथ संचरित किया कि सृजनशील ऊर्जा के साथ वासंती उल्लास का अद्भुत समन्वय प्रत्यक्ष अनुभव होता रहा। हम सब भी उनके स्पर्श से धन्य होते चले जा रहे हैं। उनके द्वारा जाग्रत् युग निर्माणी लहर मनुष्य मात्र के लिए आशा और सौभाग्यदायिनी सिद्ध हो रही है।

युगऋषि के जीवनोद्देश्य रहे युग निर्माण अभियान में जिस प्रौढ़ता-परिपक्वता की उम्मीद की जाती है, उसे विकसित करना हम सबका पवित्र कर्त्तव्य भी है और समय द्वारा प्रस्तुत एक चुनौती भी। हमें कर्त्तव्यनिष्ठ होकर समय की चुनौती बहादुरी के साथ स्वीकार करनी चाहिए और अपनी पात्रता-प्रामाणिकता सिद्ध करनी चाहिए। इस उद्देश्य के लिए जो ऊर्जा प्रवाह आवश्यक है, उसे ऋषिसत्ता वासंती प्रवाह के साथ निश्चित रूप से संचरित करेगी। हमें उसे ग्रहण करना है, धारण करना है और उचित उद्देश्यों में नियोजित करना है।

### प्यार सच्चा है किन्तु... ?

इसमें कोई शक नहीं कि युगऋषि के प्रति हमारा प्यार सच्चा है, किन्तु अभी समय की चुनौतियाँ स्वीकार करके उनके प्रामाणिक सहयोगी बनने के लिए पर्याप्त नहीं। हमारे जीवन में वह प्रौढ़ता और सामर्थ्य विकसित होनी चाहिए जो युग निर्माण की बड़ी जिम्मेदारियों को सँभाल सके।

हममें से अधिकांश के मन में बड़े वेग से यह भाव उठते हैं कि युगऋषि और उनकी युग निर्माण योजना से जन-जन को जोड़ दें। अपने क्षेत्र में, सारे देश और विश्व में युग निर्माण की जीवन्त लहर उठे और मनुष्यमात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य की अवधारणा साकार हो उठे। लेकिन उस कार्य को चाहते हुए भी हम आशा के अनुरूप अंजाम दे नहीं पा रहे हैं। कारण यही है कि एक अच्छी भावना, अच्छी चाह को पूरा करने के लिए व्यक्तित्व में जो प्रौढ़ता, समर्थता चाहिए, उसे हम विकसित नहीं कर पाये हैं। पूज्य गुरुदेव अविकसितों पर गुरुतर भार डाल भी कैसे दें?

हमारा प्यार सच्चा है तो हमें स्वयं को इस स्तर तक विकसित करना चाहिए कि प्रचार-प्रसार के प्रारंभिक कार्यों से एक कदम आगे बढ़कर सृजन के दायित्वों को स्वीकार कर सकें और उन्हें चरितार्थ करके भी दिखा सकें। इसके लिए हमें समझदारी से उनके निदेशों-संकेतों को समझना होगा, ईमानदारी से उसके लिए स्वयं को तैयार करने की तप साधना करनी होगी और जिम्मेदार बनकर लक्ष्यों के निर्धारण और पूर्ति के क्रम में पूरी तत्परता से लगना होगा। नव वर्ष में नये वसंत से हमें इसी के लिए पर्याप्त ऊर्जा के वरण-धारण और नियोजन की साधना में विवेक और साहस पूर्वक प्रवृत्त होना होगा।

### युगऋषि की अपेक्षाएँ

युगऋषि ने अपने परिजनों-प्रज्ञा पुत्रों से जो अपेक्षाएँ की हैं, वे सार-संक्षेप में कुछ इस प्रकार हैं :-

**साँचा बनें** : हर परिजन प्रज्ञायुग के अनुरूप अपने व्यक्तित्व को साँचे के रूप में विकसित करे। साँचे से जो सटता है, प्रामाणिक पुर्जा बनता जाता है। इसी प्रकार हमारे भीतर भी वह क्षमता विकसित होनी चाहिए कि अपने संपर्क में आने वाले लोगों के व्यक्तित्व को युगऋषि की चाह के अनुरूप ढालते चले जायें। हम जिन्हें यज्ञ से, दीक्षा से, संस्कारों से, साहित्य से जोड़ते हैं, उन्हें क्या इतना अपनत्व दे पाते हैं कि वे फिर हमसे सटे ही रहें, दूर न हों। क्या हम अपने अपनत्व की गर्मी से उनकी जड़ता को पिघलाकर उन्हें ग्रहणशील बना पाते हैं? जो युगऋषि के विचारों से प्रभावित होकर हमारे निकट आते हैं, वे यदि हमसे जुड़ते नहीं या निकट रहकर भी युग निर्माणी साधक के रूप में विकसित नहीं हो पाते, तो हमारा 'साँचा' होना संदिग्ध ही रहेगा।

**मॉडल तैयार करें** - हम अपने परिवार को एक अनुकरणीय मॉडल-नमूने के रूप में विकसित करें। परिवार के अन्तर्गत घर-परिवार भी आता है तथा कार्य परिवार भी। मिशन की छोटी-बड़ी संगठित इकाइयों को भी प्यार और सहकार से भरे श्रेष्ठ परिवार के रूप में विकसित, स्थापित करने की जिम्मेदारी उन्होंने सौंपी है। इसमें भी हममें से अधिकांश वांछित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

**एक आँख प्यार की, एक सुधार की** - जो व्यक्ति अपने से जुड़ा है वह प्यार के नाते ही जुड़ा रह सकता है। प्यार के नाते जो जुड़ा है, उसमें यदि वांछित सुधार नहीं लाया जा सका, तो पास बुलाने का प्रयोजन कहाँ सधा? इसलिए प्यार के नाते सुधार की कुशलता को उन्होंने उक्त अलंकारिक मुहावरे का रूप दिया है। जिससे प्यार है उसे सुधारने की जगह उसके हर कार्य को अच्छा बताना उसे लाड़ में बिगाड़ देने के लिए पर्याप्त है।

इसी प्रकार जिसे सुधारना है उसे प्यार की, अपनत्व की गर्मी का अनुभव न करा पाना सुधार की क्षमता को कुंठित कर देता है। प्यार के अभाव में सुधार की क्षमता होने पर भी व्यक्ति सामने वाले के सुधार-परिष्कार की मेहनत न करके उसकी उपेक्षा कर देता है। अथवा सुधार का प्रयास प्यार की जगह अहंकार से करना चाहता है। अभ्यास में चूक होने पर प्यार से सुधारने की जगह उसका तिरस्कार करने का क्रम चल पड़ता है। दोनों ही स्थितियों में युगऋषि के सूत्र का उल्लंघन होने लगता है। एक आँख में प्यार की जगह मोह तथा दूसरी में सुधार की जगह तिरस्कार झलकने लगता है। इस स्थिति में सृजन क्षमता कुंठित हो जाती है। हमें इन कमियों को दूर करके युगऋषि की उम्मीदों के अनुरूप बनना और बनाना है।

### सुनिश्चित चरण बढ़ें

परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी-सन् 2026 तक का समय विशिष्ट है। इसमें युगऋषि के मानस पुत्रों को अपनी उपासना, साधना को अधिकाधिक प्रखर एवं प्रामाणिक बनाते हुए सुनिश्चित संकल्पित चरण बढ़ाने होंगे। हमें अपनी निर्धारित समय सीमा में निर्धारित लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए अपने को तैयार करना होगा। इसके लिए हम सब वसंत के विशिष्ट ऊर्जा प्रवाह को ग्रहण करने के प्रति जागरूक रहें। अपनी तप-साधना से उसे ग्रहण करने का प्रयास और अभ्यास करें। बड़ी चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने जीवन को धन्य बनाएँ, सद्गुरु के सच्चे शिष्य कहायें।

# कैलीफोर्निया निवासी युगऋषि के समर्पित शिष्य ने वनवासी क्षेत्र के विकास के लिए प्रस्तुत किया आदर्श

## श्रद्धेय डॉ. साहब ने गायत्री चेतना केन्द्र का लोकार्पण किया

**मनखेड, नाशिक। महाराष्ट्र**

कैलीफोर्निया, अमेरिका में रह रहे गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री धनसुख भाई लुहार ने वनवासी क्षेत्र के गाँव मनखेड़ में वनवासी बच्चों के लिए आश्रम परम्परा के अन्तर्गत चलने वाले एक आदर्श आवासीय विद्यालय का निर्माण कराया है, जो बेहद प्रभावशाली और सफल सिद्ध हुआ। इस शानदार प्रयोग के बाद अब उस क्षेत्र में युगचेतना का विस्तार करते हुए वनवासियों के उत्थान की बृहद योजना बनाई जा रही है। इसी आश्रम परिसर में गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण कराया गया है। स्वास्थ्य कारणों से अत्यंत सीमित प्रवास पर जाने वाले श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इस चेतना केन्द्र का लोकार्पण करने मनखेड़ पहुँचे थे। वनवासियों ने उनका पारंपरिक ढ़ग से गीत-नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भावभरा स्वागत किया, आशीर्वाद लिए।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्डया जी का पारंपरिक स्वागत करते मनखेड़ के वनवासी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने 16 दिसम्बर को गायत्री चेतना केन्द्र का लोकार्पण एवं ध्वजारोहण किया।

### मेडिकल कैम्प

गायत्री चेतना केन्द्र के उद्घाटन समारोह के साथ एक मेडिकल कैम्प लगाया गया। पुणे, मुम्बई और नाशिक से आए 35 डॉक्टर्स ने इसके लिए सेवाएँ प्रदान कीं। लगभग 1500 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक दवाइयाँ और परामर्श प्रदान किए गए।

### जिला संगठन का योगदान

मनखेड की योजना में जिला संगठन का प्रशंसनीय योगदान रहा। नाशिक रोड, इंदिरा नगर, सिड़को, जात्रा, पंचवटी, हिरावाड़ी रोड आदि शाखाओं से जुड़े लगभग 250 कार्यकर्त्ताओं ने प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान दिया। इसमें वरिष्ठ जनों में उपजोन समन्वयक श्री एम. सोनवने, जिला समन्वयक श्री अमृतभाई पटेल, सर्वश्री जयंती भाई, जीवन राठौर, एस. पाठक, प्रेमासिंह ठाकुर, जयगोविंद पाण्डेय, चंद्रकान्त पटेल, सुनील कुमार पाठक, मणीभाई पटेल और युवाओं में सर्वश्री विनायक गिल्लूरकर, राकेश पटेल, भावेश, रवि, सौ. प्रीति तिवारी, दक्षाबेन, प्रिया भारोटे, नर्मदाबेन, हंसाबेन, ओमदेवी आदि की प्रमुख भूमिका थी।

### अब समीपवर्ती गाँवों में युग चेतना विस्तार की तैयारी

मनखेड के इस विद्यालय ने क्षेत्र में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। अब वहाँ गायत्री चेतना केन्द्र की स्थापना की गई है, जिसके माध्यम से बाल संस्कार शाला, गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना, व्यसनमुक्ति अभियान, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन जैसे कार्यक्रमों को चलाकर पूरे वनवासी क्षेत्र के उत्थान की योजना बनाई जा रही है। स्थानीय परिजन श्री भगवान बोरोले अकेले अब तक इस कार्य के लिए पूरी तरह समर्पित रहे, अब एक संगठन बनाकर युग चेतना का व्यापक विस्तार किया जायेगा।

# जहाँ संवेदनाएँ जागती हैं, वहीं स्वर्ग की सृष्टि हो जाती है

मनखेड गुजरात की सीमा के निकट नाशिक जिले का एक वनवासी गाँव है। एक बार श्री धनसुख भाई इस क्षेत्र से गुजरे। उन्होंने गाँव के कई बच्चों को हाथ में रोटी लेकर खाते बड़ी दयनीय स्थिति में देखा। तभी उन्होंने यहाँ के बच्चों के लिए कुछ करने का संकल्प लिया था।

श्री धनसुख भाई लोहार कैलीफोर्निया में रह रहे गायत्री परिवार के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता हैं। वे नवसारी, गुजरात के मूल निवासी हैं। परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणाओं से जाग्रत् संवेदनाओं का ही परिणाम था कि अपने देश के गरीब बच्चों के उत्थान के लिए उनके मन में संकल्प उभरा और लगभग एक करोड़ रुपये की लागत से उसे साकार कर दिखाया।

इस आवासीय विद्यालय में माता भगवती कन्या छात्रावास एवं आचार्य श्रीराम शर्मा बालक छात्रावास है। स्वच्छ पेयजल, सौर संयंत्र से बिजली, सुसज्जित विज्ञान-प्रयोगशाला की एक आदर्श व्यवस्था है। विद्यालय में 200 बालिका और 300 बालक अध्ययन करते हैं। उन सभी के लिए स्कूली यूनिफॉर्म, गरम कपड़े, स्वच्छ बर्तन, गद्दे-रज़ाई, भोजनशाला आदि की व्यवस्था विद्यालय की ओर से की गई है।

विद्यालय के आदर्श संचालन एवं शानदार सफलताओं में वहाँ के शिक्षक-शिक्षिकाओं की कड़ी मेहनत का भी अहम योगदान है। प्राचार्य श्री मणिहार जी स्वयं मुस्लिम हैं, लेकिन वहाँ बच्चों को जो शिक्षा-संस्कार दे रहे हैं, वे अनुकरणीय हैं। सभी विद्यार्थी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में बड़ी रुचि से भाग लेते हैं और शानदार प्रदर्शन करते हैं।

मनखेड़ के आवासीय विद्यालय की स्वच्छ-सुव्यवस्थित भोजनशाला

# नाशिक के प्रबुद्धजनों के बीच व्याख्यान

## श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने सुझाये आज की समस्याओं के समाधान

नाशिक के रावसाहेब थोरात ऑडिटोरियम में प्रबुद्धजनों की एक विशाल सभा का आयोजन हुआ। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इसे संबोधित किया, विषय था- ''आज की समस्याओं का समाधान अध्यात्म'। 1000 बैठक क्षमता वाला यह सभागार पूरी तरह से खचाखच भरा था। इस अवसर पर देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी और नाशिक-मनखेड के कार्यक्रमों के लिए विशेष रूप से पहुँचे दक्षिण पश्चिम जोन समन्वयक श्री कैलाश महाजन, श्री राजकुमार वैष्णव भी मंचासीन थे।

### रोटरी क्लब, नाशिक में

18 दिसम्बर को नाशिक के रोटरियन्स के बीच भी उद्बोधन हुआ। ज़ोन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री कैलाश महाजन ने इसे संबोधित किया। विषय था-''प्रबुद्ध वर्ग धर्मतंत्र को सँभाले।''

इस व्याख्यान के आयोजन में रोटेरियन श्री पराग पाटोदकर का विशेष प्रयास रहा। मंचासीन श्रीमती मनीषा विसपुते, सचिव एवं आदर्श विद्यालय नाशिक रोड की प्रधानाचार्या ने छात्र-छात्राओं में नैतिकता के विकास लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को बहुत उपयोगी बताया।

नाशिक के रावसाहेब थोरात ऑडिटोरियम में प्रबुद्धजनों को संबोधित करते हुए श्रद्धेय डॉ. साहब

# ठंड से ठिठुरते लोगों की सहायता करने पहुँचे युग निर्माणी

## सैकड़ों स्कूली बच्चों को दिए गर्म कपड़े

**मेरठ। उत्तर प्रदेश**

गायत्री शक्तिपीठ, कैथवाड़ी पर शहीद मेजर आशा राम त्यागी जूनियर कन्या स्कूल, कैथवाड़ी व वीरमती कन्या हाईस्कूल, कैथवाड़ी की लगभग 300 निर्धन छात्राओं को ऊनी स्वेटर प्रदान किए गए। ये स्वेटर गायत्री परिवार और रोटरी क्लब के सौजन्य से प्रदान किए गए। इस अवसर पर परिव्राजक श्री शरद शर्मा ने बच्चों को नैतिक शिक्षा तथा गायत्री उपासना की प्रेरणाएँ भी दीं। श्री अरविन्द गोयल, समन्वयक (सुरभि गौशाला) ने सेवा-सहयोग के लिए आभार ज्ञापित किया ।

26 दिसम्बर को भारत विकास परिषद् (संस्कार शाखा) मेरठ एवं गायत्री शक्ति पीठ, कैथवाड़ी (मेरठ ) के संयुक्त तत्वाधान में प्राइमरी पाठशाला क्रमांक-२ कैथवाडी व ग्राम जिटोला में गरीब छात्र-छात्रों को गर्म टोपी, जूते, मोजे वितरित किए गए। इस अवसर पर प्रधानाचार्या, शिक्षिकाएँ, ग्राम प्रधान एवं गायत्री परिजन उपस्थित थे। ग्राम जीटोला में ग्रामवासियों ने नशामुक्ति अभियान को गति देते रहने का आश्वासन भी दिया।

प्राइमरी पाठशाला-2 कैथवाड़ी में गर्म कपड़ों का वितरण

# आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं ने जिला स्तरीय प्रशिक्षण की माँग की

## आन्दोलन के विस्तार के लिए 8 टोलियों का गठन हुआ

**अमरावती। महाराष्ट्र**

नैष्ठिक परिजनों के प्रयासों से पूरे देश में गर्भ संस्कार के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। अमरावती में भी कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण हुआ। इसमें भाग ले रही आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने पूरे जिले की आंगनबाड़ी सेविकाओं के लिए एक अलग से कार्यक्रम की मांग की।

मुख्य प्रशिक्षिका सुश्री उमा शर्मा ने गर्भकाल में शिशु की विकास प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण किया, जिसमें उन्होंने बताया कि कैसे शिशु के आईक्यू, ईक्यू, एसक्यू के विकास की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। आकोला डॉ. मधु अग्रवाल ने गर्भवती के आहार और नागपुर की अंजली लालवानी ने दिनचर्या सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया। रजनी, अर्चना, नीलिमा, सुनंदा, अस्मिता ने भी कई विषयों पर प्रशिक्षण दिया।

अमरावती शहर तथा आसपास के तहसीलों के भाई-बहिनों ने प्रशिक्षण लिया। आन्दोलन के विस्तार के लिए 8 नई टोलियों का गठन हुआ। शिविर की सफलता में सीमा सगीर्वे, डॉ. ओमप्रकाश बजाज, शोभा बहुरूपी की प्रमुख भूमिका रही।

शिविर में भाग ले रही बहिनें

# प्रखण्ड की 9 पंचायतों में कंबल वितरण

**गढ़पुरा, बेगूसराय। बिहार**

गायत्री मंदिर, गढ़पुरा में 18 दिसंबर को कंबल का वितरण किया गया। इस अवसर पर कड़ाके की ठंड से ठिठुरते दुनही पंचायत के 20 गरीब, विकलांग महिला-पुरुष में कंबल बाँटे गए, उन्हें स्वल्पाहार भी कराया।

कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक श्री संजीव कुमार जायसवाल ने बताया है कि इस वर्ष बढ़ती ठंड को देखते हुए गायत्री परिवार की गढ़पुरा शाखा प्रखण्ड की 9 पंचायतों में गरीब, विकलांग, निस्सहायों में कम्बल वितरित करेगी। इसका शुभारंभ दुनही पंचायत से हुआ है। उन्होंने कहा कि सेवाकार्य गरीबी-अमीरी से नहीं, भाव संवेदनाओं पर निर्भर है। गायत्री परिवार लोगों की संवेदनाएँ जगाकर पीड़ित मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहता है। इस सेवाकार्य में सुशील कुमार सिंघानिया, संजीव पोद्दार, ऋतुराज कुमार, रमेश महतो, डोमन महतो आदि का विशिष्ट सहयोग रहा।

# कैंसर पीड़ितों और दृष्टिहीन विद्यार्थियों के बीच जाकर बाँटी खुशियाँ

**क्रिसमस का त्यौहार**

- 400 मरीजों को फल एवं मेवे बाँटे गए।
- धर्मशाला को चार कुर्सियाँ और टेबल भेंट किए गए।
- संताक्लॉज़ बनकर बच्चों को चॉकलेट व उपहार दिए।

संता बने दिया के सदस्य उपहार बाँटते हुए

**मुम्बई। महाराष्ट्र**

जाग्रत् संवेदनाओं की बुनियाद पर पीड़ित मानवता की सेवा और उसके माध्यम से जन-जन में आशा-उत्साह जगाकर एक विराट देव परिवार का निर्माण, यही है युवा संगठन 'दिया' का ध्येय। दिया, मुम्बई अपने उद्देश्य के प्रति सदैव समर्पित है। विचार क्रान्ति एवं सेवा के माध्यम से समाज में आस्तिकता के विस्तार के हर अवसर पर अग्रणी दिखाई देते हैं, यह जागरूक युवा।

दिया मुम्बई और गुरु नानक इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेण्ट साइंसेस की सन् 2015 से क्रिसमस का त्यौहार मनाने कैंसर पीड़ितों एवं दिव्यांगों के बीच पहुँचती रही है। इस वर्ष भी 25 दिसम्बर को वे संत गाड़गे महाराज धर्मशाला में पहुँचे। यह वह धर्मशाला है जहाँ कैंसर पीड़ित एवं उनके परिजनों के लिए नाममात्र के खर्च पर रहने की उत्तम व्यवस्था है। इस धर्मशाला में औसतन 500 लोग प्रतिदिन रहते हैं।

गायत्री परिवार के युवाओं को अपने बीच पाकर पीड़ित बच्चों में खुशियों की अनिर्वचनीय लहर छा गई। परिजनों ने संताक्लॉज़ बनकर बच्चों को चॉकलेट एवं उपहार दिए। नृत्य, कविता एवं गीतों से उन्हें गुदगुदाया। चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई, जिसने बच्चों की सृजनशील कल्पनाएँ मुखरित हुईं।

कैंसर पीड़ित बच्चों का जन्मदिन मनाते हुए

**जन्मदिन मनाया, प्रार्थना की**

पीड़ितों में प्यार का संचार करने पहुँची टीम ने गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र के उच्चारण के साथ पीड़ितों के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की। प्रज्ञागीत भी गाए गए। दिसम्बर माह में जिनका जन्मदिन था, उनके जन्मदिन भी मनाए गए।

## दृष्टिहीन बालिकाओं के सशक्तीकरण के लिए

क्रिसमस के दिन दिया की टीम दादर स्थित श्रीमती कमला मेहता अंध विद्यालय भी गई। यहाँ 170 छात्राएँ पूर्व प्राथमिक से लेकर सातवीं तक की कक्षाओं में ब्रेल लिपि में शिक्षा ग्रहण करती हैं और उच्च कक्षाओं में जाकर सामान्य विद्यार्थियों के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं।

दिया और स्कूल की प्राचार्या सुश्री वर्षा जाधक के बीच शानदार संवाद हुआ। इस वार्ता का उद्देश्य सहानुभूति एवं सही सोच के माध्यम से एक विशेष जरूरतमंद समुदाय को सशक्त बनाना था।

# सामूहिक श्रमदान कर दिया स्वच्छता का संदेश

**बूँदी। राजस्थान**

दिया, बूँदी के युगसृजेताओं ने 15 दिसम्बर को सामूहिक श्रमदान कर नगर के बहादुर सिंह सर्कल स्थित पार्क की सफाई की। सफाई के बाद 'स्वच्छता ही सेवा' विषय पर एक संगोष्ठी भी आयोजित की गई। दोनों ही कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं ने नगरवासियों को बृहद् स्तर पर स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. संजय भल्ला ने अपने संदेश में कहा कि स्वच्छता का हर व्यक्ति के स्वभाव में अनिवार्य रूप से समावेश होना चाहिए। यह व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि समाज के हर व्यक्ति का काम है। स्वच्छता स्वास्थ्य के लिए नितांत आवश्यक है।

पार्क की सफ़ाई में जुटे दिया के सदस्य

गोष्ठी में उपस्थित सभी लोगों ने पॉलीथीन का प्रयोग न करने की शपथ भी ली।

इससे पूर्व दिया के 20 से अधिक सदस्यों ने मिलकर पार्क में पड़े कूड़े को एकत्रित एवं निस्तारित किया, घास-फूस हटाई। बहादुर सिंह सर्कल पार्क के संरक्षक श्री बलराज सिंह खिची ने भी इस कार्य की सराहना करते हुए स्वच्छता के प्रति जागरूक रहने का आश्वासन दिया।

## ऐतिहासिक 'बालियात्रा' मेले के बाद पूरे परिसर की सफाई की

**कटक। ओड़िशा**

कटक नगर में महानदी के किनारे गड़गड़िया घाट पर 'बालियात्रा' नामक उत्सव मनाया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा से शुरु होकर एक सप्ताह तक चलने वाला यह उत्सव 'बोइत वन्दाण' (नौका पूजन उत्सव) है। किसी जमाने में ओड़िशा के व्यापारी व्यापार हेतु नावों से बाली, जावा, सुमात्रा, श्रीलंका आदि सुदूर प्रदेशों की यात्रा करते थे। यात्रा से पूर्व नौकाओं की एक उत्सव के साथ नौकाओं की सामूहिक पूजा की जाती थी। आज इस उत्सव ने एक व्यापारिक मेले का रूप ले लिया है।

इस वर्ष 12 से 22 नवम्बर तक यह उत्सव चला, जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। गायत्री शक्तिपीठ, चटता के कार्यकर्त्ताओं ने मेले के बाद 1 दिसम्बर को इस मेला परिसर में बृहद् स्वच्छता अभियान चलाया। गायत्री परिवार के सैकड़ों भाई-बहनों ने मिलकर बालियात्रा मैदान की सफाई की। इसके माध्यम से पूरे क्षेत्र को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।

स्वच्छता के उत्कृष्ट अभियान के बाद उत्साहित परिजन

**नेत्र चिकित्सा शिविर**

## वरिष्ठ कार्यकर्त्ता की पुण्य स्मृति में लगा शिविर

**130 मरीजों ने लाभ लिया, 22 मरीजों के मोतियाबिन्द के ऑपरेशन हुए**

**जमशेदपुर। झारखण्ड**

दिनांक 21 दिसम्बर को गायत्री शक्तिपीठ, गोलपहाड़ी में पूर्व मुख्य प्रबन्धक ट्रस्टी स्वर्गीय दौलत राम चाचराजी के स्मृति में उनके सुपुत्र सुनील चाचरा के सौजन्य से मोतियाबिन्द जाँच शिविर आयोजित हुआ। इसमें कुल 130 मरीजों ने इसका लाभ लिया। मोतिया बिन्द के ऑपरेशन के लिए उपयुक्त पाये गये 22 मरीजों का रोटरी क्लब जमशेदपुर के सहयोग से निःशुल्क ऑपरेशन भी कराया गया। उन्हें मेडिकल किट एवं चश्मे भी दिए गए। जसवीर कौर, पूर्णिमा सिंह, रेखा शर्मा, मंजू मोदी, सरोज पाण्डेय का शिविर की सफलता में मुख्य योगदान रहा।

## व्यसनमुक्त भारत अभियान

अपने देश में विकास की राह में अनेक बाधाएँ हैं, लेकिन नशा सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। देश में जाति, धर्म, पार्टी आदि के नाम पर न जाने कितने विवाद होते हैं, लेकिन इस भस्मासुर को हर कोई बिना किसी विरोध के गले लगाता दिखाई देता है। दुर्घटना, अत्याचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार में बड़े-बड़े आन्दोलन होते हैं लेकिन सत्यानाशी नशीले पदार्थों के विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठती।

नशा बच्चों में फैशन की तरह आता है और उन्हें खोखला बना देता है। पहले धन, फिर तन और अंत में चरित्र का पतन कर डालता है नशा। जब तक हमारा समाज नशे के चंगुल में रहेगा, तब तक अच्छे दिनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

### नशे से बचना है तो क्या करें?

- यदि आपका कोई मित्र, सम्बन्धी या अनजान व्यक्ति नशे की पेशकश करता है तो आप दृढ़ता से 'ना' कहिए।
- इण्टरनेट के सहारे नशे के ख़तरों का गहराई से अध्ययन कीजिए।
- नशे के कारण बीभत्स हुए चेहरों को याद कीजिए।
- जहाँ भी नशा करने की चर्चा हो, विषय बदल दीजिए।
- नशा करने वाले लोगों की संगत से बचिए।
- दृढ़ संकल्पशक्ति का प्रयोग कीजिए।
- गायत्री मंत्र का जप और विविध प्राणायाम नशे से दूर रहने के लिए आवश्यक बल प्रदान करते हैं।

## व्यसनमुक्त भारत रथयात्रा दे रही है संदेश

### सब नसावन की जड़ है नशा, जिसने किया सो फँसा

**बलौदाबाजार। छत्तीसगढ़**

इन दिनों राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदेश में शान्तिकुञ्ज से भेजे गए चार विशाल एलईडी स्क्रीनयुक्त रथों के माध्यम से चारों प्रान्तों में नशे के विरुद्ध सशक्त अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में बलौदा बाजार के दाऊ कल्याण सिंह पीजी कॉलेज, शाश्वत इंग्लिश मीडियम हायर सेकण्ड्री स्कूल तथा संजय कॉलोनी में कार्यक्रम हुए। टोली नायक श्री व्योमेश देशमुख ने नशामुक्ति पर संक्षिप्त संदेश दिया। प्रोजेक्टर के सहारे नशे के बीभत्स परिणाम समझाये गये, संकल्प दिलाए गए तथा नशे से दूर रहने के उपाय भी बताये गए।

इसी तरह छत्तीसगढ़ के रायगढ़, जांजगीर, जिले में 1 से 6 दिसम्बर की तारीखों में 9 ब्लाकों में वीडियो रथ द्वारा व्यसनमुक्ति का सन्देश दिया गया। लैलुंगा, धरमजयगढ़, घरघोड़ा, तमनार, रायगढ़, पुसौर, बरमकेला, सरिया, सारंगगढ़, चन्द्रपुर आदि शहरों में हजारों विद्यार्थियों एवं जन सामान्य को नशामुक्ति हेतु प्रेरित किया गया।

ये कार्यक्रम लोगों को बहुत आकर्षित कर रहे हैं। नशे के सामूहिक बहिष्कार के संकल्प लिए जा रहे हैं। एक नारा बुलंद हो रहा है, 'सब नसावन की जड़ है नशा, जिसने किया सो फँसा।' इस फाँस को काटना ही होगा।

**मन्दसौर। मध्य प्रदेश**

नशामुक्त भारत रथयात्रा के क्रम में सीतामऊ, मन्दसौर, मल्हारगढ़ आदि तहसील के कई विद्यालयों, सामाजिक-धार्मिक संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित किए।

**देवास। मध्य प्रदेश**

देसंविवि की परिवीक्षाधीन छात्राओं के प्रवास से देवास के नशामुक्ति आन्दोलन को बल मिला। कई शिक्षण संस्थानों में नशामुक्ति के कार्यक्रम हुए। एक कार्यक्रम श्रीमंत तुकोजीराव पंवार शा. नवीन विज्ञान महविद्यालय में सम्पन्न हुआ। सभी कार्यक्रमों में छात्र-छात्राओं को नशामुक्ति के संकल्प दिलाए जा रहे हैं।

देवास के एक महाविद्यालय में विद्यार्थियों को नशा न करने का संकल्प दिलाती देसंविवि की छात्रा

## दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

**श्रीमती कल्पना शर्मा, मथुरा। उत्तर प्रदेश**

गायत्री तपोभूमि मथुरा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एवं युग निर्माण योजना ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री प्रमोद कुमार शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती कल्पना शर्मा का 28 दिसम्बर 2019 को देहावसान हो गया। यह मिशन के प्रति उनकी अनन्य आस्था ही थी कि अस्वस्थ होने के बावजूद अपनी परवाह न करते हुए वे अपने पति को गुरुकार्यों के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित करती रहीं। उनके इस असाधारण योगदान के प्रति हजारों परिजनों ने अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए उनकी आत्मशान्ति की प्रार्थना पावन गुरुस्ता से की।

**श्री जे.पी. ढौंडियाल, वाराणसी। उत्तर प्रदेश**

उत्तर रेलवे, वाराणसी स्टेशन पर ऑफिस सुपरिंटेंडेंट का दायित्व सम्मानित स्तर से निभाते हुए वाराणसी कैण्ट स्थित प्रज्ञा पीठ के संचालन हेतु नियमित रूप से चार घंटे का समय देने वाले श्री जगदम्बा प्रसाद ढौंडियाल जी की जीवन यात्रा 2 दिसंबर 2019 पूरी हो गई। गायत्री परिवार ट्रस्ट काशी द्वारा उनकी आत्मशान्ति के लिए आयोजित अखण्ड जप आदि कार्यक्रमों में शामिल होकर सैकड़ों परिजनों ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि दी।

**श्रीमती मानकुंवर बैस, आलोट, रतलाम। मध्य प्रदेश**

स्थानीय महिला मंडल की कार्यवाहक श्रीमती मानकुंवर बैस का स्वर्गवास 14 दिसंबर 2019 को हो गया । वे 82 वर्ष की थीं। वे पूरी तरह से मिशन के लिए समर्पित रहीं। उनके परिवार जनों ने मृतक भोज न करवाकर गायत्री शक्तिपीठ में एक साधना कक्ष के निर्माण का संकल्प लिया।

उपरोक्त तथा विगत दिनों दिवंगत समस्त देवात्मात्माओं को शान्तिकुञ्ज-गायत्री परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धाञ्जलि।

**जानते और समझते हुए भी अन्याय का विरोध करने की शक्ति जिसमें से नष्ट हो गई है, वह जाति अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकती। - शरतचन्द्र**

# वनवासी क्षेत्र में आस्था का महाकुम्भ

## विशाल कलश यात्रा, 11000 दीपों से हुआ दीपमहायज्ञ

**पिण्डावल, डुंगरपुर। राजस्थान**

वनवासी बहुल जिले के एक छोटे-से गाँव पिण्डावल में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में आस्था का महाकुम्भ दिखाई दिया। 2400 कलशों की विशाल कलश यात्रा निकली जो तीन घण्टे तक चली। बग्घियों पर महाराणा आदि राष्ट्र-वीरों की झाँकी, ढोल-नगाड़े और गायत्री मंत्र के साथ देशभक्ति के जयघोष राष्ट्र-गौरव बोध के साथ जन-जन में जमी धार्मिक आस्थाओं को उकेर रहे थे। इस कलश यात्रा में क्षेत्रीय प्रतिष्ठित संत श्री अच्युतानन्द जी महाराज और आसपुर के विधायक श्री गोपीचंद मीणा ने भी भाग लिया। यज्ञ स्थल पर पहुँचने पर कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री नाथूराम उपाध्याय ने देवशक्तियों को धारण करने वाली देवियों की आरती उतारकर उनका स्वागत किया।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री नमोनारायण पाण्डेय जी की टोली पहुँची थी। दूसरे दिन देवपूजन के समय गायत्री मंत्र की सामर्थ्य की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि गायत्री उपासना हमें अपने आपको पहचानने और सद्ज्ञान व सत्कर्म के माध्यम से आत्मशक्तियों को बढ़ाने की प्रेरणा देता है। गायत्री मंत्र में जीवात्मा को परमात्मा तक ले जाने की सामर्थ्य है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत करते गणमान्य एवं दीपयज्ञ में उपस्थित जनमेदिनी

दूसरे दिन देवपूजन-यज्ञ के साथ यज्ञोपवीत संस्कार का विशेष आयोजन रखा गया था। इसके अन्तर्गत 78 बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार कराए गए।

पूर्णाहुति की पूर्व संध्या पर आयोजित दीपयज्ञ में 11000 दीपों की रोशनी से पूरा पिण्डावल जगमगा उठा। उसी समय शान्तिकुञ्ज के विशिष्ट प्रतिनिधि, देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पधारे। मुख्य सड़क से कार्यक्रम स्थल तक लोगों ने हाथ में जलते दीपक लेकर उनका भावभरा स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने जीवन में अध्यात्म और 'ओम' का महत्त्व बताया। उन्होंने श्रद्धालुओं को गायत्री मंत्र की दीक्षा भी दिलाई।

78 बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार हुए

### जन्मभूमि को जगाकर धन्य हो गया अंत:करण

इस महायज्ञ के मुख्य संयोजक पिण्डावल के मूल निवासी श्री नाथुराम उपाध्याय, जो अभी धुलिया (महाराष्ट्र) में रहते हैं, थे। उन्होंने अपनी जन्मभूमि में युगचेतना विस्तार के लिए कई माह तक जन-जागरण अभियान चलाया। यज्ञ की सफलता पर उन्होंने कहा, ''आज जन्मभूमि में जनजागरण का मेरा संकल्प साकार हुआ। इस शानदार सफलता से हृदय गद्गद है। आस्था के इस बीजांकुर को आगे भी हम पोषण देते रहेंगे।'' उन्होंने सहयोगी शाखा एवं मण्डलों का आभार भी व्यक्त किया।

# गौ, गंगा, गायत्री, गीता के जयकारों से गूँज उठी ग्रामीण नगरी

**उझानी, बदायूँ। उत्तर प्रदेश**

उझानी में 19 से 22 दिसम्बर की तारीखों में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजित हुआ। चारों दिन 'गौ, गंगा, गायत्री, और गीता, यह भारत की शान पुनीता' के जयघोष ग्रामीण नगरी गूँजती रही। शान्तिकुञ्ज से श्री शशिकान्त सिंह की टोली के साथ कई वरिष्ठ प्रतिनिधि युग संदेश देने पहुँचे थे, जिनके प्रभाव से युगऋषि के सुविचारों को अपनाते हुए अपने जीवन के नैतिक, बौद्धिक एवं आत्मिक उत्थान की उमंगें हजारों श्रद्धालुओं में उमड़ीं।

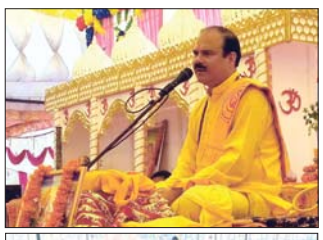

जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा ने कहा कि गायत्री और यज्ञ के विश्वव्यापी विस्तार का अभियान मानव में देवत्व को जगाने का अभियान है। उत्कृष्ट विचार और अच्छे संस्कारों वाले नागरिक ही उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकते हैं।

उत्तर जोन प्रभारी श्री रामयश तिवारी ने युवाओं को अपनी सामर्थ्य का सदुपयोग करते हुए गाँव, शहर और समाज में व्याप्त कुरीतियों, मूढ़ परम्पराओं को समाप्त करने एवं उन्हें जाग्रत् तीर्थ बनाने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

शांतिकुंज टोली के नायक शशिकांत सिंह ने कहा कि अपने उद्बोधन एवं प्रज्ञा पुराण कथा में उपरोक्त कार्यों के संदर्भ में व्यावहारिक उपायों की चर्चा की। श्री बसंती लाल सोलंकी ने गृहस्थ जीवन की उत्कृष्टता के सूत्र समझाये।

इस कार्यक्रम में समाजसेवी श्री प्रदीप गोयल, धीरेंद्र सोलंकी, भुवनेश शर्मा, डॉ. वी.पी. शर्मा और प्रदीप गुप्ता सहित ग्रामीणों और दूर-दराज से आए साधु-संतों ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित कीं।

संजीव कुमार शर्मा, बी. ज्ञानेंद्र, रामभरोसे लाल माहेश्वरी, सुखपाल शर्मा, नरेंद्रपाल शर्मा, भगवान सिंह, कल्पना मिश्रा, ममता शर्मा, माया सक्सेना, सचिन देव, बेचेलाल, भवेश शर्मा, पंकज कुमार, नत्थूलाल शर्मा, मुन्नी देवी, ध्रुव यादव, सहित सैकड़ों लोगों ने इस कार्यक्रम की सफलता में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया।

# जिसमें इंसानियत है, वह देवता है

## 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का मार्मिक उद्बोधन

**ट्रस्टियों ने किया प्रतीक चिन्ह भेंट**

डॉ. चिन्मय जी को उनके प्रथम नगर आगमन पर अशोकनगर गायत्री परिवार ट्रस्ट की तरफ से प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया। इस मौके पर प्रमुख ट्रस्टी श्रीमती रेखा तायड़े, श्रीमती उमा दुबे, श्रीमती पूनम गुलाठी, श्री प्रमेन्द्र तायड़े, श्री सचिन शर्मा, श्री बंटू गुप्ता, श्री सुरेश मोहिते, श्री पालीवाल जी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

अशोकनगर में '' राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका'' विषय से सभा को संबोधित करते हुए डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री और यज्ञ के व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी स्वरूप की व्याख्या की। उन्होंने कहा-आज के जमाने में इंसानियत गायब होती जा रही है। व्यक्ति अपने अभावों से कम और दूसरों की प्रगति-समृद्धि, सफलताओं से ज़्यादा दुःखी नज़र आता है। किसी बच्चे को कोई खिलौना दे दिया जाय तो वह खुश हो जाता है, लेकिन पढ़ा-लिखा समझदार कहा जाने वाला इंसान अपनी स्वार्थ और संकीर्णता के कारण भगवान में भी कमियाँ निकाल लेता है और भगवान के नाम पर समाज को बाँटता और विग्रह खड़ा करता दिखाई देता है, यह चिंता का विषय है।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि गायत्री वह विवेक दृष्टि है जो सबमें अपनी ही आत्मा का विस्तार देखती है, दूसरों के दुःख-सुख में अपने दुःख-सुख की अनुभूति कराती है। इंसानियत का नाम ही यज्ञ है। किसी की सहायता करना यज्ञ में आहुतियाँ देने के बराबर है। जो देना और बाँटना जानता है वह देवता है। गायत्री परिवार का कार्यकर्त्ता देवता है, क्योंकि वह सबके कल्याण की कामना के साथ समाज की सच्ची सेवा करता है।'' ''

# प्रतिदिन एक लाख आहुतियाँ दीं, 1500 श्रद्धालुओं ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली

**अशोकनगर। मध्य प्रदेश**

22 से 26 दिसम्बर की तिथियों में अशोकनगर में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ अध्यात्म के यथार्थ की ओर श्रद्धालुओं का ध्यान आकर्षित करने में अत्यधिक सफल रहा। 24 दिसम्बर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी यज्ञ में युवा पीढ़ी को अध्यात्म विज्ञान की ओर ध्यानाकर्षित करने पहुँचे।

अपने उद्बोधन में डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री और यज्ञ को जीवन में धारण करने की प्रेरणा के साथ बच्चों को बचपन से ही देना और बाँटना सिखाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर अशोकनगर विधायक श्री जजपाल सिंह जज्जी और पूर्व विधायक कोलारस श्री महेन्द्र सिंह यादव मंचासीन थे। उन्होंने पूरे जिले की ओर से शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत-अभिनंदन किया। कड़ाके की ठंड और रिमझिम बूँदों के बीच भी श्रोताओं ने अदम्य उत्साह के साथ युवा युगसृजेता का संदेश सुना।

कार्यक्रम संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से लोकप्रिय कथावाचक श्री श्यामबिहारी दुबे की टोली पहुँची थी। उन्होंने प्रतिदिन यज्ञ एवं अलग-अलग विषयों पर कथा प्रसंगों के माध्यम से मानवमात्र को गायत्री एवं यज्ञ को दैनंदिन जीवन में शामिल करने तथा जीवन की बुराइयों को छोड़ सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने का उत्साह जगाया, संकल्प दिलाए। प्रतिदिन गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र से एक लाख से अधिक यज्ञाहुतियाँ दी गईं।

कलशयात्रा में शामिल महारानी लक्ष्मीबाई की झाँकी

प्रथम दिन-22 दिसम्बर को निकली भव्य कलश यात्रा धार्मिक सौहार्द्र और सामाजिक एकता का संदेश देती रही। समाज के विविध वर्गों ने दो दर्जन से अधिक स्थानों पर फल, चाय, बिस्किट बाँटे और पुष्पवर्षा की।

# 50 बहिनों का पुंसवन संस्कार हुआ

## गर्भवती बहिनों के नियमित मार्गदर्शन की व्यवस्था बनाई

**ग्वालियर। मध्य प्रदेश**

भगवती देवी महिला मंडल द्वारा सनातन धर्म मंदिर, ग्वालियर में दो दिवसीय 14 एवं 15 दिसम्बर को पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। दीपयज्ञ के पश्चात आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी संगोष्ठी कार्यक्रम का विशिष्ट आकर्षण था, जिसमें डॉ. ज्योति गुप्ता एवं डॉ. श्रद्धा सक्सेना ने गर्भवती बहिनों की दिनचर्या, भोजन, योगाभ्यास, मनोरंजन, व्यवहार आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। परिणाम स्वरूप 15 दिसम्बर को 50 गर्भवती बहिनों का पुंसवन संस्कार हुआ।

महिला मण्डल ने गर्भवती बहिनों के प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन के लिए गायत्री शक्तिपीठ तानसेन नगर पर नियमित व्यवस्था बना दी है। कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती बबली बंसल एवं डॉ. ज्योति शुक्ला ने सभी गर्भवती बहिनों से वहाँ आकर मार्गदर्शन लेते रहने और संस्कारवान संतति को जन्म देने का आह्वान किया।

सर्वश्री ओ.पी. गुप्ता, अशोक गुप्ता, हेमन्त त्यागी, संजय गुप्ता, अनंत चतुर्वेदी आदि सभी वरिष्ठ भाई-बहिन के समन्वय-सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा।

**बेहटा बुजुर्ग, कानपुर। उत्तर प्रदेश**

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के अन्तर्गत गायत्री परिवार बेहटा द्वारा एक नए ग्रामीण क्षेत्र बेहटा बुजुर्ग में पाँच दिवसीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। एक अति प्राचीन जगन्नाथ मन्दिर प्रांगण में बड़ा ही उत्साहवर्धक कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम संयोजक श्री विवेक साहू के अनुसार 21 लोगों ने दीक्षा ली, 35 विद्यारंभ एवं 2 यज्ञोपवीत संस्कार हुए। क्षेत्रीय परिजन मानवमात्र के कल्याण की भावना और युग संदेश से बहुत प्रभावित हुए। श्री आर.बी. परमार के अनुसार सर्वश्री बलवीर कुशवाहा, योगेन्द्र यादव, धर्मेन्द्र यादव, दिनेश दुबे, प्रताप अग्निहोत्री आदि में प्रखर युगसृजेताओं जैसी ऊर्जा दिखाई दी।

## 351 घरों में यज्ञ हुए

**सौंसर, छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश**

बोरगाँव रेमंड में 22 दिसम्बर को 351 घरों में यज्ञ किए गए। इन्हें सम्पन्न कराने गायत्री शक्तिपीठ छिंदवाड़ा के अलावा पधराखेड़ी, सौंसर, पिपलानारायणवार, पाण्ढुर्णा, पारडसिंगा, लोधीखेड़ा घोटी, रामाकोना, खैरी तायगाँव, रंगारी, भिडोनी आदि क्षेत्रों से युग पुरोहित भाई-बहिनों की टोली पहुँची थी। सभी यजमानों को व्यक्तित्व परिष्कार और राष्ट्र के नवनिर्माण में सहभागी बनने की प्रेरणाएँ दीं।

**समय पर किए जाने वाले कर्म का त्याग करना मूर्खता और दुर्बलता का सूचक है। - भगवान श्रीकृष्ण**

# एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का सम्मान

**सड़क का नामकरण हुआ पं.शंभुदयाल मिश्रा जी के नाम**

**होशंगाबाद। मध्य प्रदेश**

बी.एस.एन.एल. से लेकर पुलिस लाइन तक की होशंगाबाद नगर की सड़क का नामकरण महान स्वतंत्रता सेनानी पंडित शम्भुदयाल मिश्रा के नाम पर हो गया है। पं. शंभुदयाल मिश्रा के पोते एवं शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आनंद मिश्रा, पौत्रवधु श्रीमती मिथलेश नंदनी मिश्रा की उपस्थिति में 20 दिसम्बर 2019 को गायत्री परिवार की वरिष्ठ परिजन श्रीमती पुष्पा दुबे ने इस आशय के शिलापट्ट का अनावरण किया। इस अवसर पर वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्रीमती माधवी मिश्रा, ज्योति रैकवार, अभय वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

मार्ग का नामकरण समारोह

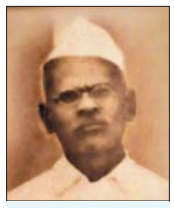
स्व. पं. शंभुदयाल

श्री आनन्द मिश्रा ने इस अवसर पर कहा कि पंडित जी के नाम पर मार्ग का नामकरण होशंगाबाद वासियों को उनके जीवन आदर्शों का स्मरण करायेगा। ऐसे महापुरुषों के जीवन आदर्श अपनाकर ही समाज की स्वच्छ, समग्र, सशक्त उन्नति संभव है। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने उपस्थित महानुभावों को युगऋषि की लिखी पुस्तक 'परिवर्तन के महान क्षण' भेट की।

पंडित शम्भुदयाल मिश्रा जी ने गाँधी जी के आव्हान पर सिविल जज (1912-19) पद से इस्तीफा देकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। वे 1920 से 1938 तक सैंट्रल असेम्बली के सदस्य भी रहे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन, नमक सत्याग्रह आदि में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

पं. शम्भुदयाल जी सादगी, त्याग एवं साहस की प्रतिमूर्ति थे। उनके पुत्र श्री ए.के. मिश्रा एवं पौत्र ने भी उन्हीं के जीवन आदर्शों को अपनाकर और युग निर्माण आन्दोलन से जुड़कर समाज की सेवा में संलग्न हैं।

# राजस्थान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की महाविद्यालय स्तरीय परीक्षा योजना का अंतिम चरण सम्पन्न

**सभी प्रतिभागियों ने रचनात्मक कार्यों में भागीदारी के संकल्प लिए**

**जयपुर। राजस्थान**

राजस्थान प्रान्त में महाविद्यालय स्तर पर तीन चरणों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजित हुई। इसमें 15 जिलों के लगभग 10000 विद्यार्थी एवं युवा शामिल हुए।

अन्तिम चरण की परीक्षा 7 दिसम्बर 2019 को गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी, जयपुर में आयोजित हुई। इसमें लिखित परीक्षा, तार्किक योग्यता एवं आशु भाषण का समावेश किया गया था।

परीक्षा में आरडी महिला महाविद्यालय भरतपुर ने प्रथम, जिला शिक्षण प्रशिक्षण केन्द्र जैसलमेर ने द्वितीय और राजकीय महाविद्यालय बूँदी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को समारोहपूर्वक सम्मानित किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि सोमकांत शर्मा एवं समाजसेवी डॉ. निमिषा गौड़ थी। उन्होंने तथा परीक्षा के संयोजकों ने युवाओं को अपनी ऊर्जा को समाज हित में लगाने का आग्रह किया। जिनसे प्रेरित होकर परीक्षार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति जैसे रचनात्मक कार्यों में बढ़-चढ़कर योगदान देने का संकल्प व्यक्त किया।

इस समारोह तथा तीन स्तरीय परीक्षा के आयोजन से लेकर उसे प्रेरणादायी, प्रभावशाली बनाने में दिया के प्रांतीय प्रभारी श्री रमेश छंगाणी तथा वरिष्ठ कार्यकर्त्ता सर्वश्री हर्ष मिश्रा, भक्तभूषण वर्मा, मीनाक्षी बघेल, शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री महेश शर्मा आदि की प्रमुख भूमिका रही।

# अखण्ड ज्योति पत्रिका मासिक एवं उसके सहयोगी प्रकाशन (वर्ष 2020 में पत्रिकाओं का शुल्क)

| पत्रिका | प्रकाशन अवधि | वार्षिक चंदा (₹) | आजीवन चंदा (₹) |
|---|---|---|---|
| अखण्ड ज्योति (हिन्दी) | मासिक | 220/- | 5000/- (20 वर्ष) |
| अखण्ड ज्योति (अंग्रजी) | द्विमासिक | 140/- | --- |
| **प्रकाशन स्थान** : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा (उत्तर प्रदेश)-पिन-281003 फोन (0565) 2403940, 2402574 मो.- 09927086291, 07534812038 | | | |
| युग निर्माण योजना (हिन्दी) | मासिक | 110/- | 2500/- (20 वर्ष) |
| युगशक्ति गायत्री (गुजराती) | द्विमासिक | 180/- | 4000/- (20 वर्ष) |
| **प्रकाशन स्थान** : गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उत्तर प्रदेश)-पिन-281003 फोन (0565) 2530128, 2530115 | | | |
| अखण्ड ज्योति (मराठी) | मासिक | 135/- | 2500/- (20 वर्ष) |
| अखण्ड ज्योति (ओडिआ) | मासिक | 150/- | 2400/- (20 वर्ष) |
| अखण्ड ज्योति (बंगला) | मासिक | 150/- | 2200/- (20 वर्ष) |
| अखण्ड ज्योति (तमिल) | द्विमासिक | 96/- | --- |
| अखण्ड ज्योति (मलयालम) | द्विमासिक | 96/- | --- |
| अखण्ड ज्योति (असमिया) | द्विमासिक | 96/- | --- |
| प्रज्ञा अभियान (हिन्दी) | पाक्षिक | 60/- | --- |
| प्रज्ञा अभियान (गुजराती) | पाक्षिक | 60/- | --- |
| प्रज्ञा अभियान (बंगला) | मासिक | 24/- | --- |
| युग प्रवाह **(वीडियो पत्रिका)** (52 अंक) | | 500/- | --- |
| **प्रकाशन स्थान** : श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249411 फोन (01334) 260602, 261328, 260309 | | | |
| अखण्ड ज्योति (तेलुगु) | मासिक | 150/- | 1300/- (10 वर्ष) |
| **प्रकाशन स्थान** : गायत्री चेतना केन्द्र, मूसापेट हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) पिन-500018 फोन -040-23700722, मो.- 09949111175 | | | |

# अश्वमेध यज्ञ, मुम्बई का प्रयाज

## संस्थाओं में संगोष्ठियाँ कर दिया जा रहा है गायत्री परिवार के विचार और गतिविधियों का परिचय

दिया, मुम्बई महानगर की महत्त्वपूर्ण हस्तियों और प्रतिष्ठित संस्थानों तक पहुँचकर 6 से 11 जनवरी 2021 तक की तारीखों में आयोजित हो रहे अश्वमेध महायज्ञ की जानकारी लोगों तक पहुँचा रही है। इनके माध्यम से वे अपनी सक्रियता और उद्देश्य का परिचय लोगों को दे रहे हैं।

25 दिसम्बर को दिया की एक टीम प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान मणिबेन नानावती महिला कॉलेज, विलेपार्ले पहुँची। वहाँ 'बगैर औषधि के कायाकल्प' विषय पर संगोष्ठी के माध्यम से नारी सशक्तीकरण एवं स्वास्थ्य से सम्बन्धित परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को प्रस्तुत किया। कहा, ''एक महिला अपने परिवार एवं समाज में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनका उत्थान समाज के किसी भी महत्त्वपूर्ण विकास की आधारशिला है।''

इस वार्ता को एनएसएस समन्वयक गीता वरुण और प्राचार्य डॉ. राजश्री त्रिवेदी ने बहुत पसंद किया, सराहा। विचार क्रान्ति के विराट प्रयोग अश्वमेध महायज्ञ में सहयोग एवं भागीदारी का उत्साह जताया। सुश्री संगीता तिवारी, नटूभाई की इस कार्यक्रम के आयोजन में प्रमुख भूमिका थी।

अश्वमेध यज्ञ में भागीदारी के लिए उत्साहित हुई नानावती महिला कॉलेज की छात्राएँ

# शान्तिकुञ्ज के बैंक खाता नंबर

**केवल शान्तिकुञ्ज से प्रकाशित पत्रिकाओं की सदस्यता और साहित्य की धनराशि जमा कराने के लिए**

खाते का नाम-
**'श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी)'**
पंजाब नेशनल बैंक : 4694002100000572 (16 डिजिट)
IFSC Code : PUNB0469400
एक्सिस बैंक : 914020031711542 (15 डिजिट)
IFSC Code : UTIB0000156
एचडीएफसी : 09431450000037 (14 डिजिट)
IFSC Code : HDFC0000943

**दान की राशि के लिए**

खाते का नाम- **'श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट'**
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया : 10876858311 (15 डिजिट)
IFSC Code : SBIN0002350
पंजाब नेशनल बैंक : 3129010100000018 (16 डि.)
IFSC Code : PNUB0469400
एक्सिस बैंक : 156010100013846 (15 डिजिट)
IFSC Code : UTIB0000156
एचडीएफसी बैंक : 09431450000157 (14 डिजिट)
IFSC Code : HDFC0000943
आईसीआईसीआई बैंक: 023901000010 (12 डिजिट)
IFSC Code : ICIC0000239
बैंक ऑफ बरोडा : 09260100004639 (14 डिजिट)
IFSC Code : BARBOHARDWA

**'शांतिकुंज आपदा राहत कोष'**
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया - खाता संख्या : **30491675367**
**IFSC :** SBIN0010588

कृपया अपनी धनराशि **NEFT** (नेशनल इलैक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रान्स्फर, जो ऑन लाइन हो जाता है) ही करें। बैंक में नकद रुपये जमा न करायें, क्योंकि नकद राशि जमा कराने पर शान्तिकुञ्ज के खाते से 57.50 रुपये बैंक चार्ज कटता है।

उपरोक्त खातों में धनराशि जमा कराने के बाद ट्रान्स्फर का प्रूफ और उसका प्रयोजन पत्र या ई-मेल से संबंधित विभाग को अवश्य भेज दें।

# अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन

**लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश**

22 दिसम्बर को गायत्री परिवार लखीमपुर खीरी द्वारा अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मालपानी जी ने वर्तमान पीढ़ी के निर्माण में अखण्ड ज्योति के पत्रिका की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

कई श्रोताओं ने पत्रिका के संदर्भ में अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में अजय वर्मा, सुरेन्द्र वर्मा, राजेश वर्मा, परबीता सिंह, राजकुमारी श्रीवास्तव, मुन्नी देवी, चन्द्रिका प्रसाद मौर्या सहित नगर व जिले के बुद्धिजीवी लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ कुलदीप वर्मा ने किया।

## रूढ़ियों-मूढ़मान्यताओं से मुक्ति के लिए सत्साहित्य का स्वाध्याय करें

**गुठनी, सिवान। बिहार**

बाबा हंसनाथ की पावन नगरी सोहगरा शिवधाम में 15 दिसम्बर को अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन आयोजित हुआ। इस अवसर पर बाबा हंसनाथ सेवा समिति के सचिव तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता मिन्हाज सोहागरवी ने कहा कि अज्ञानता सम्पूर्ण दुःखों की जड़ है। अखण्ड ज्योति जैसे सत्साहित्य के स्वाध्याय से अज्ञानान्धकार से मुक्ति मिलती है।

मुख्य वक्ता श्री बनवारी लाल ने अखण्ड ज्योति की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के विचार रुढ़ियों और मूढ़मान्यताओं से समाज को मुक्त कर प्रगतिपथ पर अग्रसर करते हैं। कई विद्वान वक्ता श्री पारसनाथ पाण्डेय, डॉ. प्रेम कुमार सिन्हा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

सम्मेलन का संचालक जितेन्द्र गुप्ता ने आरती के साथ कार्यक्रम का समापन किया। मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश जायसवाल सहित श्री परमानंद शर्मा, श्री प्रभुशंकर तिवारी, श्री विजेन्द्र बैठा के साथ कई सम्मानीय जन उपस्थित रहे।

# गायत्री तपोभूति मथुरा में आगामी दिनों चलने वाले शिविर

**चन्द्रायण साधना :**
- 09 मार्च से 07 अप्रैल

**सावित्री साधना**
- 12 जनवरी से 16 जनवरी
- 16 फरवरी से 20 फरवरी
- 02 मार्च से 06 मार्च
- 12 अप्रैल से 16 अप्रैल

**प्राकृतिक चिकित्सा :**
- 23 फरवरी से 01 मार्च
- 15 मार्च से 22 मार्च
- 19 अप्रैल से 26 अप्रैल

**नौ दिवसीय संजीवनी साधना**
- 22 जनवरी से 30 जनवरी
- 25 मार्च से 02 अप्रैल

नियम-अनुशासन की जानकारी प्राप्त करने एवं पंजीयन के लिए सम्पर्क कीजिए :
**गायत्री तपोभूमि, मथुरा**--281003
फोन : (0565) 2530128, 2530115

# गुरुधाम से मिली नई ऊर्जा, प्रखर प्रेरणा और नए संकल्पों के साथ नववर्ष का शुभारंभ

श्रद्धेया जीजी नववर्ष की मंगलकामना और आशीर्वाद देते हुए

भौतिकवादी दुनिया जहाँ आतिशबाजी और शौक-मौज के साथ नये वर्ष का स्वागत करती दिखाई देती है, वहीं गायत्री परिवार के परिजन अपने गुरुधाम से नई ऊर्जा एवं प्रेरणा लेकर नए संकल्पों के साथ सक्रियता को नवगति दने एवं अपने समर्पण भाव को बढ़ाने के लिए उत्साहित होते हैं। ऐसे हज़ारों परिजन 1 जनवरी को वर्ष 2020 का स्वागत करने के लिए शान्तिकुञ्ज में उपस्थित थे। उन सभी की एक ही प्रार्थना थी, एक ही कामना थी-

**हे प्रभो! जीवन हमारा यज्ञमय कर दीजिए।**

नए वर्ष के पहले दिन शान्तिकुञ्ज में भारत ही नहीं, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि कई देशों के नैष्ठिक परिजन उपस्थित थे। उन्होंने गुरुधाम में उपासना, ध्यान, यज्ञ करने तथा अखण्ड दीप-गुरुस्मारक, गायत्री माता के दर्शन करने को अपने जीवन का सौभाग्य कहा।

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया जीजी ने हर परिजन से भेंट कर अपनी शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने युगऋषि के सतयुगी संकल्पों को साकार करने के लिए परम वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी तक अपनी सक्रियता को सात गुनी करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें नई उमंग और भरपूर उल्लास के साथ परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना है। निःसंदेह इस वर्ष अपना मिशन एक नई ऊँचाई को छुएगा।

नववर्ष 2020 की सबको बहुत-बहुत मंगलकामनाएँ। नया वर्ष, नया सवेरा, नया उत्साह, नई उमंग हम सबके मन में उस प्रेरणा का संचार करे, जिससे हम एक नूतन भारत का, एक समृद्ध भारत का निर्माण कर सकें।

**- श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉ. साहब**

# माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी जी ने गायत्री परिवार के युवा जागरण एवं राष्ट्र निर्माण के प्रयासों को सराहा

बनारस के सर्किट हाउस में 28 दिसम्बर को अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी की भेंट हुई। यह संयोग ही था कि श्रद्धेय डॉक्टर साहब वहाँ प्रांतीय युग सृजेता शिविर को संबोधित करने पहुँचे थे और मुख्यमंत्री जी अपने काशी प्रवास पर थे।

परस्पर स्वागत की औपचारिकताओं के पश्चात् विविध विषयों पर चर्चा हुई। श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने युवाओं में सकारात्मकता, सृजनशीलता, समाजसेवा, राष्ट्रभक्ति के संस्कार विकसित करने के लिए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे प्रयासों से मुख्यमंत्री जी को अवगत कराया। स्वरोजगार, स्वावलम्बन, नशामुक्ति, बाल संस्कार से लेकर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों की जानकारी दी।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने गायत्री परिवार की गतिविधियों पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं श्री अमित शाह जी से गायत्री परिवार के प्रशंसनीय कार्यों की चर्चा सुनने को मिलती रहती है। उन्होंने गायत्री परिवार के प्रयासों की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं। कहा कि ऐसे प्रयासों से ही समाज में व्याप्त भेदभाव और संकीर्णताओं की दीवारें टूटेंगी, एक नए राष्ट्र का अभ्युदय होगा।

बनारस के सर्किट हाउस में चर्चा करते राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित दो शिखर पुरुष माननीय श्री योगी जी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्डया जी

> ऐसे प्रयासों से ही समाज में व्याप्त भेदभाव और संकीर्णताओं की दीवारें टूटेंगी, एक नए राष्ट्र का अभ्युदय होगा।
>
> – योगी आदित्यनाथ जी

कुलाधिपति जी ने माननीय मुख्यमंत्री जी को शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय आने का आमंत्रण दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

आरंभ में परस्पर स्वागत के क्रम में श्रद्धेय डॉ. साहब ने मुख्यमंत्री जी को गायत्री मंत्र की चादर ओढ़ाई, युग साहित्य भेंट किया। मुख्यमंत्री जी ने गायत्री परिवार प्रमुख को शॉल एवं काशी का स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

## डीआईटी विश्वविद्यालय, देहरादून की प्रशंसनीय पहल

# दीक्षांत समारोह के साथ जोड़ी गई ज्ञानदीक्षा की प्रेरणाएँ

## देव संस्कृति विश्वविद्यालय के आचार्यों ने कराया संस्कार

दीक्षांत समारोह में माननीय मुख्यमत्री श्री त्रिवेन्द्रसिंह रावत के संग देसंविवि के आचार्य

**देहरादून। उत्तर प्रदेश**

मसूरी रोड, देहरादून स्थित डीआईटी विश्वविद्यालय का तृतीय दीक्षांत समारोह 21 दिसम्बर 2019 को सम्पन्न हुआ। इसमें देव संस्कृति विश्वविद्यालय के आचार्यों को भी आमंत्रित कर दीक्षांत समारोह की औपचारिकताओं के साथ ज्ञानदीक्षा समारोह की मार्मिक प्रेरणाओं के समावेश का सुन्दर प्रयास किया गया।

यह डीआईटी विश्वविद्यालय के संचालक उद्योगपति श्री अनुज अग्रवाल एवं कुलपति डॉ. कुलदीप कुमार रैना देव संस्कृति ज्ञानदीक्षा समारोह से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने सन् 2017 एवं 2018 में अयोजित दीक्षांत समारोह में भी देसंविवि की टोली को आमंत्रित कर ज्ञानदीक्षा की प्रेरणाओं से अपने विद्यार्थियों को अवगत कराया था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री थे। उन्होंने युवा पीढ़ी को शिक्षा के साथ संस्कार और जीवन की सही दिशा देने के लिए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों से जुड़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। उत्तराखण्ड में नशा निवारण और स्वच्छता के लिए किए जा रहे गायत्री परिवार के प्रयासों का उन्होंने बड़ी श्रद्धा के साथ उल्लेख किया।

डीआईटी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को अपने विशिष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से जीवन और ज्ञान की गरिमा का बोध कराने देसंविवि से श्री ओम प्रकाश तेजरा, श्रीमती अनीता तेजरा के नेतृत्व में छः सदस्यीय टोली पहुँची थी।

# युवा पथ प्रदर्शन से प्रभावित हैं राजस्थान के विधान सभा अध्यक्ष

## शान्तिकुञ्ज आए, श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव जी से चर्चा की

श्रद्धेय डॉ. साहब से युग साहित्य ग्रहण करते हुए तथा डॉ. चिन्मय जी, डॉ. प्रणव जी के संग विधान सभा अध्यक्ष एवं उनकी धर्मपत्नी

राजस्थान के विधानसभा अध्यक्ष माननीय श्री सीपी जोशी सपत्नीक 20 दिसम्बर को शांतिकुंज आए। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से भेंट कर गायत्री परिवार के अभिनव कार्यक्रम और योजनाओं की जानकारी दी।

श्रद्धेय डॉ.साहब ने कहा कि राजस्थानी युवाओं में भरपूर जोश और उत्साह है। उन्हें उनकी गौरवशाली संस्कृति के आदर्शों को अपनाने के लिए प्रेरित-सहमत किया जाय, सही मार्गदर्शन दिया जाय तो इस वीरभूमि की माटी की सुगंध फिर से राष्ट्र और संस्कृति को महका सकती है।

श्रद्धेय ने इस अवसर पर समाज में छाई नशे की प्रवृत्ति पर गहरी चिंता व्यक्त की। राजस्थान सहित गुजरात, छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश में पिछले दो माह से चल रही 'व्यसनमुक्त भारत यात्रा' की उपलब्धियों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि चार रथों के माध्यम से इन दो माह में विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों में प्रमुखता से और बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यसनमुक्ति संदेश दिया जा रहा है। इन दो माह में लाखों युवाओं को प्रेरित और संकल्पित किया जा रहा है।

**देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा योजना और देशभर में चल रहे व्यसनमुक्त भारत अभियान पर प्रमुख रूप से चर्चा हुई**

युवा उत्कर्ष के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा योजनाओं सहित की जा रही अनेक योजना और कार्यक्रमों पर भी चर्चा हुई। चर्चा में प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भी भाग लिया।

माननीय श्री जोशी जी ने गायत्री परिवार की धर्मतंत्र से लोकशिक्षण की परम्परा तथा राष्ट्रोत्थान में गायत्री परिवार के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य सर्वोपयोगी है। इसमें जीवन की गुत्थियों का समाधान है। सबको इसका लाभ लेना चाहिए।

इस अवसर पर श्रद्धेय डॉ. साहब ने माननीय श्री सी.पी. जोशी और उनकी धर्मपत्नी प्रो. हेमलता जोशी को युग साहित्य किया एवं गायत्री मंत्र का उपवस्त्र ओढ़ाया। इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज आगमन पर अतिथियों ने ऋषियुग्म के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा, सजल श्रद्धा' पर श्रद्धा सुमन समर्पित करने पहुँचे थे।

# प्रचण्ड ठंड से राहत दिलाने पहुँचा शान्तिकुञ्ज

## 10 गाँवों के 600 परिवारों को कंबल दिए

इस वर्ष पहाड़ों के साथ-साथ हरिद्वार के मैदानी क्षेत्रों को भी कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले शान्तिकुञ्ज ने जरूरतमंदों को सहारा देने का यथा सम्भव प्रयास किया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के निर्देश पर गाँव-गाँव जाकर कंबल वितरण का निर्णय लिया गया।

10 गाँवों में कम्बल वितरण करने पहुँचे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

शान्तिकुञ्ज का आपदा प्रबन्धन दल ने हरिद्वार जिले के लक्सर और खानपुर ब्लॉक का सर्वे किया। तदनुसार 30 दिसम्बर को इन तहसीलों के 10 गाँवों में जाकर वहाँ के जरूरतमंद 600 परिवारों को कंबल प्रदान किए। लक्सर ब्लॉक के गंगदासपुर, कुड़ीभगवानपुर, डूमनपुरी, डेरियो व महराजगंज खादर तथा खानपुर ब्लॉक के मोहनावाला, शेरपुरा बेला, दाबकी खेड़ा, जोगावाला तथा दल्लावाला के निवासी लाभान्वित हुए। शांतिकुंज आपदा प्रबंधन टीम में श्री राकेश जायसवाल, पद्माकर लाँजेवार, पुन्नुराम, मनोज मुखर्जी, वेदपाल, महीपाल आदि शामिल रहे।

31 दिसम्बर की रात को जब दुनिया नये वर्ष के स्वागत का उत्सव मना रही थी, तब शान्तिकुञ्ज की आपदा प्रबंधन टीम हरिद्वार नगर में मध्य रात्रि में सड़क की पटरियों पर ठंड से ठिठुरते लोगों को कंबल ओढ़ा रही थी।

**सिर के बाल सफेद हो जाने से ही कोई आदमी वृद्ध नहीं होता, वृद्ध उसी को कहते हैं जो तरुण होने पर भी ज्ञानवान हो। - मनु**

# सामाजिक परिस्थितियों को बदलने के लिए हमें युवा मन को बदलना होगा

## सतत क्रान्तिपथ पर अग्रसर करता रहा 'प्रान्तीय युग सृजेता-उत्तर प्रदेश'

उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए उत्साहित प्रदेश के युवा युगसृजेता और उन्हें संबोधित करते युवा पथ प्रदर्शक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

### शिविर की रूपरेखा

**वाराणसी। उत्तर प्रदेश**

वर्तमान समय भारत के यौवन के उत्कर्ष का है। निरंतर प्रगतिशील भारत परिस्थितियों को बदलने और भविष्य के सुनहरे अध्याय लिखने को तत्पर है। नवसृजन का ऐसा ही एक अध्याय 'प्रान्तीय युग सृजेता' युवा शिविर वाराणसी में लिखा गया।

सम्मेलन में प्रदेश के सभी 75 जिलों के चयनित 3000 युवा दिनांक 27 से 29 दिसम्बर 2019 तक एकत्रित हुए। कार्यक्रम की महत्ता एवं गरिमा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इसमें युवाओं का मार्गदर्शन करने संस्था प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं संगठन प्रभारी श्री कालीचरण शर्मा पहुँचे थे।

दिनांक 27 दिसम्बर को ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्वलन के साथ शिविर का शुभारंभ हुआ। श्री कालीचरण शर्मा जी ने तैत्तरीय उपनिषद् की भृगुवल्लरी का उल्लेख करते हुए ''युवा कैसा हो?'' विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि युवा अध्ययनशील, साधु जैसा उज्ज्वल चरित्रवान, आशावान, दृढ़ निश्चयी एवं बलवान होना चाहिए।

श्री योगेन्द्र गिरि जी ने वर्तमान पर्यावरण संकट के समाधान हेतु गायत्री परिवार की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। श्री केदार प्रसाद दुबे ने युगऋषि की ग्रामतीर्थ योजना की चर्चा करते हुए आदर्श ग्राम कैसे विकसित किए जायें, इसका व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत किया।

### अवाञ्छनीयताओं से संघर्ष

सायंकाल 'युवा दीपयज्ञ' के अवसर पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के हृदयस्पर्शी उद्बोधन से युवाओं का अंतस् प्रकाशित हुआ। 'युग की समस्याओं का एकमुश्त समाधान-विचार क्रान्ति' विषय पर उद्बोधन देते हुए उन्होंने युवाओं से वर्तमान समस्यायें यथा नैतिक पतन, समझदारों की नासमझी, संवेदनशून्यता, मानवीय मूल्यों का ह्रास, अनास्था, आत्मविश्वास की कमी, भ्रष्टाचार, बहुप्रजनन, दहेज, नारी की अवमानना, शराब, जाति-लिंग भेद के खिलाफ संघर्ष छेड़ने हेतु आह्वान किया। उन्होंने कहा कि परिस्थितियों को बदलने के लिए युवाओं की मनःस्थित को बदलना ही होगा। हमें 'सादा जीवन और उच्च विचार' की जीवन शैली अपनाते हुए क्रान्तिपथ पर बढ़ना होगा। हमें पथभ्रमित मानवता के समक्ष पुनः मंगल पाण्डे, बिस्मिल, रानी लक्ष्मीबाई जैसा आदर्श उपस्थित करना होगा।

### देवमानवों की गढ़ाई

''आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी'' विषय पर उद्बोधन देते हुए डॉ. संगीता सारस्वत ने दम्पति शिविर, गर्भ संस्कार, कन्या/किशोर कौशल शिविर, युवा जागृति अभियान को चलाने एवं प्रभावशाली बनाने के लिए उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण समझाया और कहा कि यह देवमानवों को गढ़ने का महा अभियान है।

देवमंच से दी गई प्रेरणाओं के साथ उभरते सृजन संकल्प और नवयुग की आरती उतारती बहिनें

अपराह्न आद. चिन्मय पण्ड्या जी का मंच पर आगमन हुआ। उन्होंने ''विषम परिस्थितियों में हमारे दायित्व'' पर युवाओं को संबोधित किया। युवाओं को साधना, समयदान की प्रेरणा दी। उन्होंने युवाक्रान्ति के लिए नई तकनीक का विधेयात्मक उपयोग करने और पूज्यवर के अभियान में जुड़ने का गौरव अनुभव करने के लिए प्रेरित किया।

श्री रामयश तिवारी जी ने संगठन की रीतिनीति समझायी। सायंकालीन सांस्कृतिक संध्या में पर्यावरण शुद्धि, गंगा सफाई, वृक्षारोपण, भ्रूणहत्या जैसे गम्भीर विषयों पर शानदार प्रस्तुतियाँ दी गईं।

### उत्तर प्रदेश बने उत्तम प्रदेश

समूह चर्चाओं में 'उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश' बनाने पर विचार मंथन हुआ, जिसका नवनीत संकल्पों के रूप में उभरकर आया, योजनाएँ बनीं। श्री कैलाश नारायण तिवारी ने उन्हें सबके समक्ष प्रस्तुत किया।

विदाई सत्र में आद. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ मंच पर रामकृष्ण मिशन वाराणसी के प्रमुख स्वामी वरिष्ठानंद उपस्थित थे। दोनों अतिथियों ने आध्यात्मिकता एवं व्यक्तित्व विकास पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए युवा पथ पाथेय प्रदान किया।

विविध क्षेत्रों ने अपनी आगामी वर्ष की कार्ययोजनाएँ प्रस्तुत कीं। इस अवसर पर ''आत्मनिर्माण से राष्ट्रनिर्माण'' के विविध संकल्प धारण किए गए। अंत में कार्यक्रम के संयोजक श्री गंगाधर उपाध्याय जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री आशीष सिंह, श्री जयप्रकाश वर्मा, श्री योगेश पाटिल द्वारा किया गया। युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश के सर्वश्री आदित्य पाण्डे, प्रभाकर सक्सेना, सूरज जी, अनिलेश सहित कन्हैया जी, सत्यप्रकाश गुप्ता, बेचूलाल जी, नगीना जी, घनश्याम जी, रमन श्रीवास्तव, कैलाश जी, जोन प्रभारी श्री प्रसेन सिंह, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री विन्ध्याचल सिंह एवं महिला मण्डल वाराणसी का प्रबल सहयोग प्राप्त हुआ।

इस कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता सर्वश्री कालीचरण शर्मा, रामयश तिवारी, केदार प्रसाद दुबे, युवा प्रकोष्ठ के सहयोगी योगेश शर्मा, आशीष सिंह, योगेश पाटिल, राजकुमार विश्वकर्मा, संगीत एवं मीडिया के सदस्य डॉ. शिवनारायण जी, संतोष सिंह, ओंकार पाटीदार, खिलावन सिन्हा, नरेन्द्र पाटीदार, मायाचंद भारद्वाज, भावसिंह तोमर, मनीष साहू, सौरभ शर्मा, बृजेश यादव का योगदान था। कार्यक्रम की पूर्व तैयारी में झाँसी के श्री एस.के. गोयल एवं उड़ीसा के श्री रविन्द्र गौड़ ने अथक परिश्रम किया।

## प्रांतीय संकल्प

| | |
|---|---|
| 29016 | युवाओं को मिशन से जोड़ेंगे। |
| 2955 | युवा मण्डल गठित करेंगे। |
| 10329 | युवाओं को शान्तिकुञ्ज में संजीवनी साधना सत्र करायेंगे |
| 966 | प्रवासी युवा तैयार करेंगे |
| 1132 | नई बाल संस्कार शालाएँ चलाएँगे |
| 228 | आदर्श ग्राम बनाएँगे |
| 1793 | गाँवों में ग्राम प्रव्रज्या करेंगे |
| 3809 | स्कूल-कॉलेजों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम चलाएँगे |
| 2068 | आदर्श विवाह कराएँगे |
| 361710 | वृक्ष लगाएँगे |
| 191 | श्रीराम सरोवरों का निर्माण करेंगे |
| 2942 | स्वच्छता के कार्यक्रम करेंगे |
| 2984 | झोला पुस्तकालय चलाएँगे |
| 143 | स्वावलम्बन प्रशिक्षण होंगे |
| 2950 | साधक सवा लक्ष अनुष्ठान करेंगे |
| 186994 | घरों में यज्ञ कराएँगे |
| 438052 | विद्यार्थी भासंज्ञाप में शामिल होंगे |

## प्रान्तीय युग सृजेता-उत्तर प्रदेश मुख्य वक्ताओं की कुछ प्रेरणाएँ

### देश की शिक्षण संस्थाएँ महामानव नहीं, व्यवसायी बना रही हैं

– श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

किसी राष्ट्र का उत्थान या पतन वहाँ के नागरिकों के विचार और चरित्र पर निर्भर होता है। कभी हमारा देश गाँधी, सुभाष, मंगल पाण्डे, लक्ष्मीबाई का देश रहा है। लेकिन आज हमारे शिक्षण संस्थानों में महामानव नहीं गढ़े जा रहे, व्यवसायी बनाये जा रहे हैं। विद्यार्थी आत्म विकास के लिए नहीं, पैकेज के लिए पढ़ रहे हैं, जो चिंता का विषय है। ऐसे में संवेदनशील, सृजनशील युवाओं को ही देश को सही दिशा देने के लिए आगे आना होगा।

### समस्याएँ ही न गिनाएँ, उनके समाधान तलाशें

– डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आज रावण को ढूँढ़ने के लिए लंका का टिकट कटाने की आवश्यकता नहीं है, वह विकृत चिंतन के रूप में घर-घर मिल जाएगा। आवश्यकता उस रावण से लड़ने की है।

समस्याओं का हिस्सा तो बहुत बनना चाहते हैं, लेकिन उनका समाधान कौन करेगा? लक्ष्मण मूर्छित हैं, संजीवनी कौन लाए? लंका पर चढ़ाई करनी है, पुल कौन बनाए? हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए ईश्वर का साझेदार होने का अवसर मिला है। इस सौभाग्य को व्यर्थ न गँवा दें।

### संघबद्ध हों, सलाह लें, सम्मान दें

– श्री कालीचरण शर्मा जी

युग निर्माण एक बड़ा कार्य है और उसे पूरा करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव के रूप में एक महाशक्ति हमारे साथ है। आज युग निर्माण का काम धीरे-धीरे बढ़ रहा है। गुरुदेव उसे बढ़ा रहे हैं, लेकिन हमारा आलस्य-प्रमाद उसे गति नहीं दे पा रहा।

हमें संघबद्ध होकर अपनी भूल को सुधारना चाहिए। हम सब अवतारी पुरुष हैं। हम 'सहस्र शीर्षा पुरुषः' हैं, जिनके सिर अलग हैं, लेकिन हृदय एक है। हम अपने स्वरूप को पहचानें और संघबद्ध होकर गुरुकार्यों में जुट जायें, तभी अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि स्वामी वरिष्ठानंद को युग साहित्य भेंट करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

चंद मिनिटों में पूज्य गुरुदेव का चित्र बनाता कलाकार

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय।
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 12.1.2020
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide
WPP No. 04/2018-20